२२९
कहानी

कुन्ज विहारी स्मृति ग्रन्थ माला का प्रथम पुष्प

६१.६८
2-9-1960
235
कहानी

"बातां-री-पोतली"

भाग पैलड़ो

लेखक—स्व० श्री कुन्ज विहारी शर्मा, बी. ए., साहित्य रत्न

प्रकाशक
नगर-श्री
चूरू

संपादक
गोविन्द अग्रवाल

मूल्य १.५०

प्रथम संस्करण
१०००

सं० २०२५ वि.

मोल
[redacted]

प्रकाशक
सुबोधकुमार अग्रवाल
मन्त्री, नगर-श्री
चूरू

• ॐ •

2315

कुञ्ज बिहारी स्मृति ग्रन्थ माला
की छपाई की सरुवात करणियाँ

ग्रन्थमाला को यो पैलडो पुष्प
ई कं सिरजनहार की
अमिट स्मृति नै समर्पण करै है
घणैमान स्यूं

— टीप —

समर्पण
प्रकाशक की तरफ स्यूं
भूमिका

२०११६८
२.९.१९६०

पानों

घींसो मुक्कल्	१
सेवक भगत स्वामी	६
बंजू बाबू की बात	११
नौ मण को नाय बाबो	१५
तुलसी राम जी म्हाराज	१६
राम रतन जी डागै की बात	२४
कासमीरी तुस	२७
दलजी खिजाड़ोलियो	३०
राजपूत की मांग	३७
छोटू म्हाराज की बात	४१
लाख रिपियां की बात	४५

कुञ्ज विहारी स्मृति ग्रन्थ माला

के

स्थाई सदस्य बन कर

साहित्य सेवा में योग दीजिए

स्थाई सदस्यों को ग्रन्थ माला की प्रत्येक पुस्तक २०% छूट से दी जायेगी, विशेष जानकारी के लिए पूछिये—

पुस्तक बिक्री विभाग

नगर-श्री, चूरू

चूरू (राजस्थान)

बिहारी स्मृति ग्रन्थ मा

के

ई सदस्य बन का

सेवा में योग दीजि

ज्यों को ग्रन्थ माला की प्रत्येक

जायेगी, विशेष जानकारी के

पुस्तक बिक्री विभा
नगर-श्री, चूरू
चूरू (राजस्थान)

बातां ही चालें

स्व० श्री कुञ्ज बिहारी शर्मा बी० ए०, साहित्य रत्न

– प्रकासक की तरफ स्यूं –

देस के कूणै-कूणै में बसणै वाला कोड़ां न कोड मिनखां में लाखां मिनख इस्या होवैं है, जिकां की बातां ई चालै । "बातां ई चालै" एक राजस्थानी मुहावरो है जिकै नैं लोग घणो ईं बापरैं, जियां कोई आदमी आप की ठाडाई को ठरको दिखावै जद या ही कैवैं 'क इसी करूंगा सतैवड़ी, जिको "बातां ईं चालैंगी ।" ईं बातां को ठेको फकत बडं आदमियां ताणी ईं कोनी होवैं । मिनख समाज में रैवणिये हर घर घिरस्ती, साधु-सन्यासी, लुगाई-मोट्यार, चोर बदमास अर छोटै बडै सगलां स्यूं ये जुडेड़ी होवैं है ।

चूरू जिलै में हजारां ही लोक-कथावां कंई-सुणी जावै है । ये कथावां सैकड़ो हजारूं बरसा सैं आज ताणी जबानी ही चालती आवै है । दादी पोता नैं अर नानी दोयता नैं बाता कैवती । संज्या होता ईं टाबरिया नानी दादी के बार कर फिर ज्याता अर बातां को सिल-सिलो पीढी दर पीढी चालतो रैवतो । पण या परंपरा अब वेगी स्यूं वेगी खतम होती जा रैई है । आज का टाबरिया आपकै बडेरा कं कन्नै बैठता कतरावै अर बांस्यूं दूर-दूर भागै, जद बां के पल्लै पुराणी बाता कियां पड़ै ? इसी तरिया ढाढी, ढोभी अर मिरासी लोग भी आप के जजमानां नैं बातां, कहाणियां सुणाया करता, पण अब या परपाटी भी आयक टूट रैई है अर बां के सागै-सागै आपणै लोक-जीवन को मुंह बोलतो इतिहास भी

खतम होवतो जावै है। लोक-कथावां नै नस्ट होतां देख कर अब आं कथावां नै भेली कर कै छपाणे को ध्यान भी राजस्थान का लोग कर रैया है, या चोखी बात है। आपणे चूरू स्यूं ही भाई गोविन्द अग्रवाल हजारां राजस्थानी लोक-कथावां छपाई है।

लोक कथावां में ऐतिहासिक कथावां नै छोडकर बाकी का सारा नांव पंथा कल्पित ही होवै है। घणखरी कथावां तो विना नांव कै ही चालै, "एक राजा हो, बीं कै सात बेटा हा......।" पण आं बातां में पूरा नांव-पंथा अर पूरी घटनावां होवै है, ईं खातर समाज को घणो ऊघड़वां चित्र आं बातां में देखण नै मिलै। अं बातां ही इतिहास अर ख्यात को कालजो होवै। भावी इतिहास का बीज आं बातां में रल्ड़ा होवै। ईं खातर आं बातां की रुखवाली करणै की अर आंनै सा'माकर राखणै की भोत जरूरत है। मन्नै तो आं बातां में भविष्य के इतिहास को हेलो सुणै है।

इस्यो किस्यो गांव है जिके में १००-५० प्रेरणादायक बातां नै चालती होवै? कई बातां तो दस-वीस पचास वरस चाल कर थम ज्यावै, पण कई बातां सैकड़ी वरसां तांई पीढ़ी दर पीढ़ी चालती रैवै अर गुड़कती गुड़कती कठै की कठै ईं पूंच ज्याणै। पण ज्यूं ज्यूं टेम गुजरै ज्यूं असली नांव पंथा भूली में पड़ता जावै अर साची घटनावां अर बातां लोक कथावां में मिलकर आपको सागी सरूप खो देवै। समाज में जद लिखणै पढ़णै को इतणो चरसो नहीं थो तो ... आं बातां नै कैवता सुणता अठै ताईं ले आया, पण ... आपके असली रूप में लिख कर सुरक्षित करणो

घणो जरूरी है।

नगर-श्री के मोटै काम 'जलम भोम चूरू की गौरव गाथा' लिखणै ताणी खोज-बीन करता थका कई गावां अर कस्बां मे जाणै को संजोग बण्यो तो वठै भान-भांत की अनेकानेक बातां सुणण नैं मिली। मन होयो, बातां घणमोली है, आंनै जरूर भेली करणी चायै, नहीं तो अैलीसाट चली जासी। या बात साथ्यां आगै राखी तो सारा ई साथी ईं बात की घणी जरूरत समझी।

चूरू का मानेड़ा विदवान, नगर-श्री का संस्थापक सदस्य अर म्हारा हमजोली स्व० पं० कुंजविहारी जी स्यूं मैं आं बातां नै मांडणे की अरज करी। विहारी जी का स्व० पिता प०श्री कानीराम जी बातां का खजाना हा। आपकी जिनगानी में वै भोत सी बातां तो आप की आंख्यां देखी ही अर भोत सी कानां सुणी ही। हर तरै के आदमियां में वै रैया हा, मोकै-मोकै की बातां बां कै याद ही अर कैता भी भोत ठा स्यूं। कुंजविहारीजी बा कन्नै स्यूं सुणेड़ी कई बातां म्हानै सुणाया करता। मैं बांनै कैयो, आं बातां नै लिखकर छपावां। विहारीजी बात मानली अर बातां लिखणी सरू कर दी। पण बेमाता की गति को क्युंई बेरो कोनी पड़ै। विहारी जी कोई १०-१२ बात ही मांडी ही 'क बांनै परमात्मा के घर को बुलावो आग्यो अर काम वठै को वठै ई पड़्यो रह्‌ग्यो।

अब नगर-श्री स्यूं श्री कुंजविहारी जी की याद नै स्याई बणाणै खातर "कुंजविहारी स्मृति ग्रन्थ माला" को प्रकासन सुरू

कर्‌यो गयो है अर पैली-पोत बिहारी जी की लिखेड़ी बातां ही प्रकासित करी जावं है। आगै भी ईं विधा नै चालू राखणै को प्रयत्न बराबर कर्‌यो जासी। "बातां ही बातं" कै दूसरै भाग की कथावां भी आं लिकोलिया को लेखक लिख कर त्यार कर राखी है, जिकी आगलै प्रकासन में देई जासी।

ईं ग्रन्थमाल नै सरू करणै को प्रयत्न तो नगर-श्री स्यूं ही कर्‌यो गयो हो पण ईं कै प्रकासन की व्यवस्था सेठ हणूतमलजी सुराणा करदी, जिकै स्यूं प्रकासन हाथ को हाथ होग्यो, जीं खातर सुराणा जी नै घणो धन्यवाद दियो जावै है। हणूतमलजी कै सागै बिहारी जी को घणो सनेह रेयो, ईं खातर सुराणा जी झट सैं म्हारी बात मानली। स्व० बिहारीजी को भोत घणै लोगां स्यूं गैरो संपर्क हो जिकां में घणा ईं पूरा सरतरिया है अर आज के दिन रामजी बां पर राजी है। बै लोग चावं तो ईं ग्रन्थमाला नै बराबर चालू राखणो कोई कठिन काम कोनी।

बातां की भाषा चूरू अर चूरू के आसै पासै बोली जाणै वाली एक दम बोल-चाल की भाषा ही राखी गई है, जिकी खड़ी बोली हिन्दी के भोत नेड़ै लागती है। कथावां नै टीपणै के बाद स्व० बिहारीजी आं नै फेरूं नईं देख सक्या, ईं खातर भाई गोविन्द अग्रवाल आंकी कोर कसर काढ़ कर नई पांडु लिपि बणाई है और पोथी को संपादन फूटरै ढंग स्यूं कर्‌यो है।

राजस्थानी का लूंठा विदवान डा० मनोहर जी शर्मा पोथी की भूमिका लिखणै की खेचल करी है, ईं खातर बां को घणो गुण

मानूं हूं। पोथी नै टैम पर त्यार करणै अर आप कानी स्यूं ग्रंथ-माल खातर सदा सहयोग देवता रहणै को उत्साह बिहारी जी का घणा हितू अर बुजर्ग भायला श्री बिसेसरदयाल जी गुप्ता दिरायो, जीं खातर बांनै घणो-घणो धन्यवाद देऊं हूं।

जाणूं हूं आप लोग पोथी नैं चाव स्यूं अपणास्यो अर ई ग्रंथमाला नैं आगै सारू चालू राखणै में पूरो सहयोग देवता रहस्यो।

सुबोध कुमार अग्रवाल

चूरू
२५-१०-१९६८

मंत्री
नगर-श्री, चूरू

※ भूमिका ※

राजस्थान सूरा, सतियां अर संतां री धरती है । अठै गांव-गांव में अनेक सूरा-पूरा अर सतवादी मिनख उतरया है, जिणां री बातां ईं चाले है । वां री कीरत-कथा जन साधारण रै हिरदै में लिख्योड़ी है ।

राजस्थान रै इतिहास पर समूचो देस गौरव अनुभव करै है अर उण सूं प्रेरणा लेवै है । पण ईं महिमामय इतिहास रो निर्माण ईं धरती रै भाषा-साहित्य सूं ईं होयो है, ईं तथ्य कानीं लोगां रो ध्यान हाल-तांईं भली-भांत गयो कोनी, जिण री घणीं जरूरत है ।

राजस्थानी-साहित्य रा दो अंग है—विद्वानां रो साहित्य अर लोक साहित्य । या बात खास तौर सूं ध्यान देवण जोग है कै राजस्थानी-साहित्य रा ये दोनूं अंग आपस में घुल्या मिल्या है । ईं तथ्य रो एक प्रकाशमान उदाहरण राजस्थान री बातां है, जिकी निरक्षर किसानां सूं लेयर बडे-बडे विद्वानां री रुचि रो विषय रैयी है अर आज भी या सुरुचि मिटी कोनी । इण सूं परगट होवै है कै राजस्थानी प्रजा रो इतिहास-बोध घणो उत्कट है । राजस्थान रा लोग राजवंशां रै धीर वीर नर-नारियां नै तो आप री बातां रा पात्र बणा ईं राख्या है, पण सागै ही जन साधा-

रण मांय जठै भी किणी चरित्र में कोई गुण देखो तो उण री साख रा दूहा अथवा वातां भी चाल पड़ी।

राजस्थान रै प्रत्येक इलाकै में इसो मौखिक साहित्य मिलै है, जिण सूं उण प्रदेस री जनता आप रो समय सरस करै अर साथै ई उण सूं गौरव भी अनुभव करै। इण साहित्य-धारा मांय जिको चरित्र जितरो प्रकाश देवै, उण रो जस-विस्तार भी उतरो ई घणो मिलै। या क्षेत्रीय-इतिहास री सामग्री क्षेत्र-विशेष नैं घणी प्यारी लागै तो कोई अस्वाभाविक वात कोनीं।

इण चरित्रां मांय छोटा अर बडा दोनूं ई भांत रा मिनख मिलै है। कई व्यक्ति साधारण स्थिति मांय आप री जीवन-लीला संवरण करी पण वै लारलै लोगां पर आप रो विशेषतावां री छाप छोडगा अर लोग वां नैं आज भी याद करै है। ये चरित्र इतिहास-ग्रंथा रा पात्र कोनी वण पाया पण प्रदेश-विशेष मांय तो वां नैं बड़ै-बड़ै ऐतिहासिक पात्रां सूं भी घणो अपणेस मिलरयो है।

इसै चरित्रां पर पुराणै जमानै रै साहित्य सेवियां रो ध्यान भी गयो है अर वां रै नांव पर अनेक डिंगल-गीत तथा वातां लिखी गई है। साथै ई ये विशिष्ठ व्यक्तित्व गीतां में भी गाया गया है अर यो ई कारण है कै राजस्थान रै लोक साहित्य पर भी इतिहास रो ई गहरो रंग छायोड़ो है। अठै लोक गाथावां पर कथात्मक गीतां री भोत बड़ी महिमा है। जनता ईं साहित्य-सामग्री में सदा सूं पूरो ... ती रैयी है।

ज्यूं ज्यूं समय आगै चालै, समाज मांय नया-नया चरित्र परगट होवै। इण चरित्रां रो प्रकाश जनता में फैलै अर वातां चालै। वां रो प्रभाव साहित्य सेवियां री लेखनी रो विषय भी बणै।

गद्य साहित्य री अनेक विधावां मांय एक विधा रो नांव 'रेखा चित्र' है। रेखा चित्र मांय किणी विशिष्ट पात्र रो भीतरी अर बाहरी व्यक्तित्व चित्राम ज्यूं स्वाभाविक रूप में मांड्यो जावै अर वो पाठकां रै आगै जीवतो-जागतो सो परगट होवै।

आ बात निश्चित है कै जिण पात्रां नै रेखा चित्रां मांय उतारया जावै, वां रो चित्रण उणीज प्रदेश री भाषा मांय करयो जावै तो स्वाभाविकता री रंगत पूरी ओप सागै दीपै। घणी खुशी है कै श्री कुंजविहारी जी आप री रचना मांय जिण प्रदेश रा पात्र लिया है, वां रो चित्रण भी उणीज इलाकै री भाषा मांय करयो है। ईं साधन सूं विद्वान लेखक आप री रचना रै च्यार चाद लगा दिया है।

लेखक रो ध्यान समाज रै आदर्श चरित्रां री ओर रयो है पण वां रो चित्रण स्वाभाविक शैली मांय होवण सूं ये यथार्थ रंगत रो रस भी देवै है।

प्रस्तुत संग्रह मांय लौकिक-कथानका रो आधार लेयर वां मे कुशल लेखनी सूं नयो रंग भरयो गयो है, जिण स्यूं ये ओर भी घणा सरस अर रोचक बणग्या है। वानगी देखो:—

१-माथै अर भुजावां पर सिंदूर को मोटी-मोटी लीकां खींची, धोती

की उगां लाल लंगोट कस्यो ओर गूदड़ी कै वातै मांय स्यूं आप की पुराणी जरी-किरी कटार काढ़ी। कटार नै सिंदूर स्यूं पोतै, माथै कै लगाय, 'जय भवानी' बोल, सुकलजी घर कै बारै आया। अस्सी साल को डोकरो पच्चीस बरस को काल भैरव बणग्यो, उछलतो-कूदतो आप कै सेठां की हवेली कानी चाल्यो।

(वींनो सुकुल, पृष्ठ ४)

२– संग चालतो-चालतो डूंगरां कै बीच एक मैदान में पूंच्यो। तम्बू तणग्या, जाजमां बिछगी, दाल-बाट्यां बणै लागी। लुगाई-मोट्यार आप आप कै रग-ढग स्यूं इन्नै-उन्नै बैठ्या गल्लां करै। ठाकर लोग आप आप की तरवारयां बदूकां की एक जगां झुंगली सी बणा दी अर कुरला फाकरला में लागग्या। नाथ बाबो भी आपकी चादर बिछा अर मोट सिराणै धर कर बिसराम करै लाग्यो।

(नो मण को नाथ बाबो, पृष्ठ १६)

इण उद्धरणां री भाषा-शैली अभिव्यंजनात्मक अर चित्रात्मक है। साथै ई प्रसाद गुण सूं भी भरी-पूरी है।

इण संग्रह रा चित्र सामाजिक-इतिहास री दृष्टि सूं परमोपयोगी है अर स्थानीय-इतिहास मांय वां रो महत्व रहसी। आज सूं ५०-६० बरस पहली राजस्थान रा तीन सींवजोड़ जिला (चूरू-झुंझणू-सीकर) री जीवन धारा किण रूप मांय वैवती, इण रो खरो विवरण ईं बातां मांय बांच्यो जा सकै है। सेठां रो वैभव वांरी उदारता, पंडतां रो ग्यान अर वां री गरिमा, ठाकरां री

चारित्रिक कठोरता अर वां री त्याग शीलता रा अनेक दृष्टांत इण बातां में परगट होया है अर उण बीते जमाने रै जीवन-मूल्यां री झूंकी पेश करै है। इण सार तत्व रै साथै ई जन जीवन रै प्राय: मुगल ई अंगां री भांत-भंतीली अर रंग रंगीली चित्रपटी भी ईं बातां मांय सहज ई देखी जा सकै है।

संग्रह रा घणाखरा ई लेख मुण'र मांड्योड़ा संस्मरणात्मक कथा चित्र है। इण चित्रां मांय जनता रै अनुभव रो सार समायोड़ो है, ईं कारण सूं ये लोक साहित्य री सामग्री सा भी लागै है अर इणोंज भांत सरलता तथा स्वाभाविकता सूं भी भरया-पूरा है।

आशा है जनता ईं संग्रह नै घणैं हेत अर सनमान सूं अपणैला अर आपरै समय नै सरस बणासी अर साथै ई इण सूं प्रेरणा भी ग्रहण करसी। इसै सुन्दर अर रोचक प्रकाशन खातर नगर-श्री चूरू, रै साधनाशील कार्य कर्तावां रो प्रयास सराहना जोग है। एक दिवंगत साहित्यकार री रचना रो इतरो सोवणो अर सुरंगो प्रकाशन कर संस्था आपरै पुनीत कर्तव्य री अभिनन्दनीय पूर्ति करी है।

बिसाऊ
दीपावली, २०२५ वि०

डा० मनोहर शर्मा
सम्पादक 'वरदा'

धींसो सुकल

आण पर अड़णै वाला, मोत में भिडणै वाला मिनखां की बातां चालै, जद रामगढ़ के धीमै सुकुल को नाव आगै आये बिना कोनी रैवै। सीकर राज में कदेई यो रामगढ़ कई बातां में आप कै जीवो एक ही हो। राव राजाजी का धरमेला राधाकिसन जी पोद्दार ई नगरी में सगली बातां सामरथ हा। पट्टा पोली तो बा की बैठक में बण्या ई करता, सुणनै में आवै है, काठ-कोरडो भी सेठां के हाथ में हो। इस तरियां पोद्दार, रुइया, खेमका वगेरा कई घराणा हा, जिनां के पुन-परताप सेती यो नगर सेठाणू तो बाज्या ही करतो, सागै सागै लिछमी की भेंण सुरसती भी अठै बरसां ताई आसण जमा कर बैठी, जिकै स्यू रामगढ सेखावाटी की कासी भी कुहाया करतो।

धीमाराम जी सुकुल खेमका सेठां..................के अठै बणजी-पाठ में रै कर मुनीमाई ताणी, सगलो काम सभाल्या करता। तिजूरयां की चाब्यां आं कै ही हाथ रैवती। विदवानां में विदवान, भलां में भला, पण अड़ज्यावतो जठै पूरा परसराम ही हा। एक बार कोई बात नै लेकर आप नाकं मैंठे घड़े के धणी स्यूं सुकलजी भिड बैठ्या। सचाई को साथ देवतां कोई सिर काटै तो धींसो पाछो पग कोनी देवै। दब कर कित्ता दिन जीवांगा, या सोच कर छुरी-कटारी स्यू लैस होकर, बाप-बेटो दोन्यू घर स्यू निकल्

पड़्या अर नमस्कार कर बोल्या, "म्हामनै आज्यावो" । बाप बेटो दोन्यूं झूझण लाग्या, संजोग की बात, शुक्लजी की फेंट में उनां को बेटो ही आ पड़्यो । होश बिना के जोश में शुक्ल जी बेटे नै चीर गेर्‌यो । कालजै के ई गहरै घाव नै ना वै कदेई कोनी दिखायो, पण ई झगड़े में माथै ऊपर लागेड़ी लाम्बी लाम्बी लीकां देखणियां मोकला मिनख आज तांई जीवै है ।

एक बन में दो सिंघ मावै कोनी रहणं नर्क, या बात कही जावै है, स्यात् ई भावना नै लेकर ही कदे पोद्दारां अर खेमकां में तणा-तणी होगी ही । आपको पासो हीणो देखकर, खेमका आपको घर ढ़क कर रामगढ़ स्यूं समन्दु दिसावर चल्या गया । दिसावर में रैवतां थकां बरसां का बरस बीतग्या । बूढ़ा बडेरा घणखरा रामजी का प्यारा होग्या । उनां के बेटां पोतां का ब्याह-सावा भी बठै ई होया । नई पीढ़ी बड़ी सारी होगी । बडिया जी बतावता के देस मांय रामगढ़ आपणो गाँव है, बठै आपणा हेली-नोहरा है, जमीन जायदाद है, जद टाबरां के भी मन में आवती, 'क आपां भी देस चालां, बडेरां की भोम देखां । पण तीसां पैंतीसां बरस गुजरग्या, बठै आपां नै अब कुण जाणै है ? या सोच कर मन ओटो कर लेवता ।

पण दाणै-पाणी की बात, एक बाई की सगाई को संजोग देस कानी ही बणग्यो, ब्याह भी देस में करणै की पक्की थक्की होगी, खेमका पूरै परवार समेत बाई को ब्याह करणै वास्तै रामगढ़ ... । पुराणै सेठां के बेटां पोतां नै आया देख कर गांव का लोग

राजी होया। ब्याह की त्यारियां होवण लागगी, पण पुराणी जगम नै भेय कर पोद्दारा नै सेमका को आवणो सुहायो कोनी। दोनूं सेठां का घर एक गल्ली में पडै। पोद्दार सेठ आपकै ठाकरां के हाथ सेमका की हवेली मे कुहायो, म्हारी हवेली के आगै ई गली मे गीत नाच, जान-बरात को रोलो, बंदो होवैगो तो कोई चडो हो ज्यावैगो, कोई काम करो जिको सोच समझ कर करियो।

सेमका बीतेड़ी बात नै तो भूल्या ही कोनी, या नई खबदी और सही होगी। छोरी को ब्याह करां कै झगड़ो करां। बार बार की धमकियां स्यूं घबरा कर यो ही मनसूबो कर लियो 'क पाछा ही चालो। गांव में चर्चा चाल पड़ी-सेमका पाछा जावै है। जित्ता मूंह, उत्ती बात। घीमाराम मुकुल के कानां में भी भनकार पड़ी। पस्सी बरसां को डोकरो आप की मुट्ठी में पड़्यो हो। बात नै मावल सुणी, समझी। विचारण लाग्यो, कोई मिनख आप के घर में आप की बेटी को ब्याह न करै? गीत नही गावै? जान गली में नहीं आवै? या कठै की रीत? घीमाराम के ठंडै खून में गरमी आवै लागी। मायेड़ो नमक चेत्यो, अन्याय को मुकाबलो करण नै डोकरो खाट स्यू खड़्यो होग्यो।

मुकुल म्हाराज आप के सेठा की हवेली आयो, देख्यो बींदा साथ बंध रैया है, उदासी सा रैई है। आंगण मे खड़्यो होयो हर बीतै दिनो की एक एक बात याद आवण लागी। आंसू चालग्या, पण धोंसै म्हाराज ने बडै गुण बतलावै, मारा नया हो नया। म्हाना देखतिरा बीमां जगा खड़्या बैठ्या हा।

आगे नै [illegible] सेठाणी की निजर पड़ी। [illegible] पड़ी। सीतारामजी [illegible] आसीस देई। या बात देख कर घर का सारा [illegible]। सुकुल जी की आन्दा ममता स्यूं भर उठी। [illegible] बाई आंतड़ियां में [illegible] है, सेठ मेरा [illegible]? एक एक बात के सागै [illegible] लागी।

सुकुलजी बोल्या, सेठाणी बाई, मैं सारी बात सुणली है। या बात भी देख ल्यो हूं 'क थे पाछा जाणा की त्यारी करो हो, पण मेरी भी एक बात सुणल्यो। धीमिये सुकुल के जीवतां थकां थे या बात क्यूं सोची 'क म्हे एकला हां? बाई को ब्याह अठै ई होवैगो, ठाठ बाट से होवैगो! ब्याह की त्यारी बेबूझ करो।

बींटा पाछा खुलग्या, हलदात की त्यारियां होवै लागी। दूजै दिन सुकुलजी मुदियां ही उठ्या, न्हाया धोया, दो राम का नाम लिया। माथै और भुजावां पर सिन्दूर की मोटी मोटी लीकां खींची, धोती की जगां लाल लंगोट कस्यो और खुट्टी के बातै मांय स्यूं आप की पुराणी जरी-खिरी कटार काढ़ी। कटार नै सिन्दूर स्यूं पोत, माथै के लगाय, 'जय भवानी' बोल, सुकुलजी घर के बारै आयां। लारला सुख दुःख याद आया। अस्सी साल को डोकरो पच्चीस बरस को काल-भैरव बणग्यो, उछलतो कूदतो आप कै सेठां की हवेली कानी चाल्यो। आगै आगै काल-भैरव सुकुल अर लारै गाँव। जलूस सेठां की गली में आकर रुक्यो। आगै काठ

गोरड़ै के घण्यां का ठाकर जच्या बैठ्या हा। घीसै म्हाराज को विकराल रूप देख कर एक कानी खड़्या होग्या। काल भैरव पोद्दार की हवेली के मागै खड्यो होय कर जोर सैं हेलो मारयो, ...सेठ की पोती के व्याहं का गीत गावती सेठाणियां अठै मर यादं है, कोई रोकणियो होवै तो आज्यावो............। एक बर, दो बर, तीन बर हेलो मार कर सुकुलजी गली के ई नाकै स्यूं बी नाकै ताई नागी कटार लियां चक्कर लगावै, मरण मारण नै कमर कस राखी, पण मिनख जद मरणी धार लेवै तो मौत भी रिनाणी काट ज्यावै। आखो गाँव भेलो होग्यो।

गाँव का धणी बैठक की मोरयां मांय स्यूं देखण लाग रया हा। जाणै हा, बामण मर भलां ई जायो, मानैगो नहीं, सागै गांव को भायला को भी डर लाग्यो। सेठां नै मोरी में खड़्या देख कर मुकुल सेर जोर स्यूं धाड़्यो, सेठां, धीसियो मुकुल त्यार है, थारे टाबरां नै हुकम द्यो.............।

सेठ बात नै विचारी, बैठक स्यूं बारै आया अर सुक्कलजी को हाथ पकड़ कर मांय की बैठक में लेग्या। सेठजी सुकुलजी नै टाळ-मीठा करया अर बोल्या, थारो ई पोतां को व्याह घणै उच्छाव स्यूं करो, व्याह को सारो मेचार मैं मेरै हाथ स्यूं करस्यूं।

ठाई को डोको डोग न फाड़ै। धीसै सुकुल की भवानी के परताप स्यूं व्याह का सारा नेगचार पोद्दारजी के हाथां स्यूं होया। कन्या पर भड़णं वाला, मौत स्यूं भिड़णं वाला घीसै सुकुल की आज तांई बातां ई चालै है।

सेवक भक्त स्वामी

(पिताजी बीसां बरसां तांणी रामगढ़ में रैया हा, क्यूंई देखेड़ी, क्यूंई सुणेड़ी मोकली बातां बांकै याद ही। काली माई (चूरू) के मंदर मांय पुजारी बण्या, सेठ सोभारामजी की उण पर गहरी सरदा ही। सरीर ठीक न रहणे के कारण काम छोड़णे के उपरांत भी वै जीया जितै सेठजी बां नै पूरी तनखा देता रैया। ई परसंग नै ले कर एक दिन पिताजी मनें रामगढ़ की एक बात कैई, जिकी नीचै लिखी जावै है-)

रामगढ़ में रूइयां को घराणो घणो नांव जादक रैयो है। धन अर धरम दोन्यां स्यूं भरयो पूरयो। सेठाई की धाई गाजती। सेठां की हवेली मांय घणाई नोकर-चाकर, ठाकर, जमादार, पंडित पुजारी अर मुनीम गुमास्ता रैवता। ढ़ाकास कानी को एक ठाकर भी टाबर थको आं हवेलियां में रैवतो आ रैयो हो। नई पीढी तो ठाकरां के आगै ही जामी ही। जिकै बाबू की ये ठाकर हवेली रुखालता, वो तो आँ के हाथां में ही जाम्यो हो, टाबर पणै में बो ठाकर बावै कन्नै ई सोवतो, बांकै सागै ही जीमतो, बजार जावै तो गोदी में, घरां आवै तो खवै पर।

बाबू तो ठाकर नै बावो ही मानतो, माइत की ज्यूं ही राखतो, पण पराई जाई, बाहर सें आई बीनणी ई बात नै के जाणैं?

वी कै भांवे तो और नोकर हा जिसो ठाकर हो। बाबू का पोतड़ा तो बाबो आपके हाथां धोया होसी, पण बीनणी जी ने घो मांयला घेवर कद खुआया हा ? ठाकर के एक बेटी ही, ब्याई ब्याई। अब तो ठाकरा को डेरो सेठा की हुवेली में ही थो, अठै ई कासी, अठै ई काबो। दिना नै जातां के दार ? ठाकर सत्तर सूं ऊपर टिपग्या, जिरधा ठिरधा रैवं लाग्या। हालणं चालणं की हिम्मत कोनी रैई तो पोली में माचो घाल्या सूत्या रैवता। बीमार अर बूढ़ो आदमी अठै पड्यो रैवं, बठै ही थूकै, कुरला करै। बीनणीजी नै यो सूगल-वाड़ो सुहायो कोनी। दूसरै नोकर स्यूं कुहायो 'क बाबोजी नै कहदे-आपणां घोडा हालं नोहरं में आपकी खाट घाल लेवै, बठै आराम रहसी, पोली में सारं दिन आवां जावां। नोकर ठाकरां नै कैई, होलं होलं ढुलक चालो, मै नोहरं में घाल्याऊं, अठै ई रोटी पूंच ज्यासी।

ठाकर कोई टाबर तो हो कोनी, नाड़ग्यो। सोचण लाग्यो, ई पोली की रुखाली में जिनगानी गालदी, इब हाण थकया सो घोडा हालं नोहरं में चालो। साचो कैई है, बाणियो मीत न बेसा सती।

डोकरं आप की डांगडी संभाली अर गिरतो पड़तो मेडिया उतरग्यो। बालापण में छोडेडी, बिसरायेड़ी आप की जलम भोम याद आई। जिया तिया चाल कर बजार के चोपटं आयो, सोच्यो कोई गांव को ऊंटियो मिलज्या तो बी पर पड़ कर गांव को नावों लेलेऊं। आज ठाकर नै कई बातां का थोमा आवं है।

जिणे बाद [illegible] पाया। गांवां में [illegible] देख कर नौकर ने पूछ्यो। ठाकरां किण्यां, म्हारे नोहरे कानी गया होवेगा। बाबू बोल्या, बठे क्यूं ? मैं तो बैदजी ने हवेली आवण खातर कियो है, जा अभी बुला कर ल्या। नौकर ने बेरो हो कि ठाकर नोहरे में नहीं है, ई खातर गांव बाजार कानी गयो। ठाकर चौपटे पर बैठ्या दीख्या। नौकर हवेली आवण की बात कई तो ठाकर बोल्या, ना भाई अब तो एक बार गांव ई जास्यां। बाबू ने कह देई, [illegible] आगम होसी तो ओरूं आज्यास्यूं।

नौकर हवेली आ कर बाबू ने सुणी जिणी सारी बात कह दी। बाबू के मन में बड़ो विच्यार आयो, या कियां होई ? ये लोग बावें ने क्युंई कह तो नहीं दियो है ? बीनणी क्युंई उतावली सी बोली-जी म्हे तो क्युंई कैयो नी, इत्ती बात तो ई के हाथ जहर कुहाई ही के पोलां मांय कर सारै दिन आवां जावां, ई खातर थांने नोहरे में घलाद्यां, बठे आराम पास्यो। पण ठाकरां में तो ठसको घणो, इत्ती सी बात पर ही गांव के गेले पर जा बैठ्या।

बाबू के सारी बात समझ में आ गी। कुड़तो पाछो पैर्यो, पगड़ी सिर पर धरी अरे उतावला सा बारै नीकल्या। बाबैं कन्नै जाय कर वां के सारै सी नीचै धरती पर बैठग्या। पूछ्यो, गांव जावो हो के ? बाबो भर्यो बैठ्यो हो, बोल्यो कोनी गयो। बाबू की बोली भी भारी होगी। बोल्या, "उठो, घरां चालो।" बाबो गोडां में गडेड़ो आप को सिर ऊंचो उठायो, लाल लाल आंख्यां में आज पैली बार आंसू आया हा, क्युंई लाचारी का, क्युंई अपणायत

"बोलो, के मनस्या है ?" ठाकर उणनै दियो, मनस्या याही है के तेरे हाथां में अब चल्यो जाऊं। आप रो हाथ बापू के हाथ ऊपर मेल कर ठाकर बिलख पड़्यो।

मुड़ कर देख्यो गिणाणी नहीं बीनणी पणो भली है। ठाकर बोल्या, जा बेटी, भाय न जीमण जोग कर मनै भी थोड़ो सो दलियो कर दे। बापू बीच में ही मुलक कर बोल्या, दलियो बेगो सो कर दे, बाई ने गाव जाणो है। बापू री बात सुण कर आंगणो हंसण लागग्यो, सभा नाचण लागग्या।

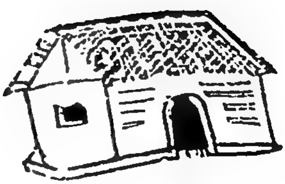

बैजू बाबू की बात

रामगढ़ के रूइया सेठ हरनन्दराय जी के बेटां की मुखिया गद्दी मुम्बई मे ही। मुम्बई मे बडै घरां की रीत मुजब बाडी मे ही ठाकुर बाडी भी होया करती। हरनन्दरायजी का बेटा बैजनाथ बाबू की बाड़ी के ऊपरलै मालै मे ठाकुर-बाडो घणैं चावस्यूं बणायेडो हो। पिताजी कैया करता, ठाकुरजी के सिंघासण मे साचा हीरा जड़ेडा हा, धार्मिक घराणूं हो, लिछमी की पूरी किरपा ही। पंडत ....ई ठाकुर बाडी का पुजारी हा, बाडी मे सै कोई बां नैं बाबोजी कैवता। बाबू बैजनाथजी तो बां के हाथां मे ही जाम्या हा। विद्या, बुद्धि अर सरल सुभावके कारणैं पंडतजी को पूरो मान तान हो। सेठां के टाबरां का सगाई ब्याह बां की सल्ला स्यूं होता, पंडितजी आपकी घणखरी ऊमर ई घर मे गाली ही।

बैजनाथ बाबू की बीनणी ठाकुरजी का दरसण करण नैं रोजीना नेम स्यूं ऊपर जावती, पण मोड़ो घणो कर देवती। बूढा पंडतजी झडोकता झड़ोकता थाकता ही ज्यावता। एक दिन बीनणी जी थोर भी देरी स्यूं पूग्या तो पंडतजी बीनणी नैं धीरैं सी समझा कर कही 'क थोड़ा सुदिंसां दरसण कर लिया करो तो ठीक रैवै, पण बीनणीजी दोरो मानग्या। मन मे सोच्यो, ठाकुरजी म्हारा, म्हे ठाकुरजी का, जणै जद आवां, ऐ पोलमो देणिया कुण? बीनणी-जी आगलैं दिन दरसण करण नैं कोनी गया। पुजारीजी भगवान

को चरणामृत लेबा ल्याया तो बीनणी पीढ़ै पर बैठी ही मोड़ो मूंह करयां, आडै हाथ स्यूं चरणामृत नै लियो।

पंडतजी मन में बिचारयो 'क अब अठै रहणो में भलाई नहीं है, कैयो भी है, "शील हीन जब देखिये, तुरत कीजिए कूच"। पंडत जी आपकी धोती गमछो कागज में बांध्यो अर रसोइये म्हाराज नै ठाकुरजी के भोग लगावण की कह कर बारी स्यूं बारै निकल ग्या।

बाबू बैजनाथजी गद्दी से बाड़ी आया। सदां की ज्यूं कपड़ा बदल कर जीमण नै चाल्या। आं के नेम हो 'क ठाकुरजी को परसाद लेकर ही जीमता। एक बाजोट पर आप, अर सारै ही दूसरी पर पुजारी जी जीमता। पण आज पुजारी जी दीख्या ई कोनी। तपास करणै पर बाबू नै सारी बात की ठा पडी तो बिना क्यूं ई कैये सुणे ही खूंटी ताण कर सोग्या। बीनणी भी के करै ? बणी को सुभाव चोखी तरियां जाणै हो। आप कुमाया कामड़ा, कीं नै दीजे दोष !

मालिक जद घर में भूखो सूत्यो, जद दूसरा किस तरियां जीमै ? मुनीम गुमास्ता आया, जीमणै को आग्रह घणो ई करयो, पण बाबू को एक ही जबाब हो, बाबो कैठै ई भूखो बैठ्यो है, बीं नै ढूंढ कर ल्यावो। दुःख स्यूं बाबू की आंख्यां लाल, अर बोली भारी होगी। भाग दौड़ सरू होई, पण मुम्बई जियाल की महा नगरी में यूं के पत्तो चालै ? आखर दिन छिपतां एक मुनीम नै समदर कै पुजारी जी संध्या करता दीख पड़्या। मुनीम-

जो हाथ जोड़ कर पंडतजी नैं सागी बात सुणाई, घर में पूरो तमियो हो रैयो है। पंडतजी को मन तो मोम हो, आंच लागतांई पघलग्यो। झट देसी आपको आसण समेट कर काम मे लगायो अर मुनीमजी के सागै हो लिया

रोही स्यू आयेडी गाय जियां आपके वाछडिये कानी चालै, जियां ही पुजारीजी सीधा बाबू के कमरै कानी गया। ब्यारू आंख्यां में ब्यार ब्यार धारा चाल पड़ी। पुजारी जी बाबू को हाथ पकड़ कर बोल्या, चाल जीम। बैजनाथजी उठकर आंगण में आया, मूढै पर आप बैठग्या अर आप कै स्यामनै एक चोकी पर पुजारी जी नैं बैठा कर बोल्या. एक बात पूछू ? पुजारी जी भरे गलै स्यू बोल्या, हां पूछ। बैजनाथजी पूछ्यो, "मेरी सगाई खातर कन्या ढूंढण नै सेठ गया हा 'क थे गया हा ?"

"मैं ही गयो हो।"

"मेरी मां थानै लड़की के बारै में पूछ्यो जद थे के कैयो हो ? याद होवै तो बताओ। मैं जद सैरनै ही सुण्यो हो।"

"या ही कैई ही 'क लड़की के है, लिछमी को रूप है, घणी सोवणी सरूप है, स्याणी है अर सुशील है।"

"जद थानै या बात मानणी चाये 'क थारै कहणै से, सगाणै सें, मेरा मा-बाप ई लिछमी नै मेरे पल्लै बाधी।"

पुजारीजी नै उथलो कोनी आयो, जद बाबू फेरूं बोल्या, "बपूंजी, अब या लिछमी मोटो मूंडो करयो जद थे घर छोड कर कियां भाग्या ? ई घणी सामर सरूप लिछमी नै पछै त्याग कर गलत्या

को श्री गणेश तो आप करो अर भूख मरणं को भागी मैं बणूं ? ओलमों तो मैं आपनै देवनो 'क किसीक सुशील, स्याणी……।"

जरा सी जल्द बाजी के कारणं गरू को सिर चेलै के स्यामनै झुकतो जावै हो. मुनीम गुमास्ता सारा चित्राम होया खड़्या हा, खंभै ओलै बीनणी की मुबकियां सुणी तो पुजारी बावो हल्वाँ सी उठ्या, बीनणी के सिर पर हाथ फेर्यो अर लाड स्यूं बोल्या, जा बेटी, थाल परोस, ठाकुरजी के भोग लगावां।

नौ मरा को नाथ बाबो

(11) रामगढ़ का सेठ आपकै पूरै अमलै नमलै सुधा नाथ दुआरै की जात्रा पर जा रैया हा। रामगढ नो नामिक सेठाणां रैयो है। दूर दूर तोई का लोग जाणता, सेठ चालै तो लिछमी भी सागै ई चालै। जात्रा मे सेठा कै सागै दसां ही बन्दूक तलवार धारी ठाकर, मोकला नोकर चाकर, रसोया, नाई वगैरा। मुनीम लोग अगाऊ बंदोबस्त में लाग रैया। रथ, बैली, ऊंट-पूरो लवाजमो, घर कूंचा घर मजला वगै।

बूंदिये का नाथजी म्हाराज भी नाथ दुआरै की जात्रा पर जा रैया हा। नांव तो बांको स्यात् गोरखनाथ हो, पण डील का भोत भारी हा, पिताजी कैया करता 'क नाथजी में नौमण वजन हो, स्यात ई खातर ही लोग बानै "नौ मण को नाथ बाबो" कैवता। भारी भीमकाय, लाल चट्ट, लंगोट कस्या, हाथ में झाड़ी को मोटो सोटो, अर कान्ध मे माला मणियां की झोली लिया नाथ बाबो भी रस्ते मे सेठा कै सागै होग्या।

एक जगां रैवणियां मिनख स्यात् बारा बरस सागै रह कर भी आपसरी में कोनी बोलै बतलावै, पण परदेस में बेई आदमियां में झट अपणापो आज्यावै, सुख दुःख का सायो बण ज्यावै। सेठ को अर फक्कड़ को के जोड़ो? पण रात दिन को बोल बतलावण स्यूं मनां में ममता पैदा होगी। लम्बुमां नै डोकरी गानर बठीनै के

ही एक राजपूत को ऊंट भाड़े करेड़ो हो, बो गैला घाटा भी जाणै हो। गरीबड़ियो सो राजपूत आपकी बोदी सी तलवारड़ी लियां ठेठ स्यूं ई भाड़े पर चाल्यो आर्यो हो।

संग चालतो चालतो डूंगरां के बीच एक मैदान में पूंच्यो। तम्बू तणग्या, जाजमां बिछगी, दाल-बाट्यां बणै लागी। लुगाई मोट्यार आप आप के रंग ढंग स्यूं इन्नै उन्नै बैठ्या गल्लां करै। ठाकर लोग आप आपकी तरवार्‍यां बन्दूकां की एक जगां झुंगली सी बणादी अर कुरला फाकरला में लागग्या। नाथ बाबो भी आपकी चादर बिछा अर सोट सिराणै धरकर बिसराम करै लाग्यो।

इतणै में एक ओपरो आदमी चिलम हाथ में लियां खीरो लेवण नै डेरै में आयो। साधारण सी बात ही कुण ध्यान देवै हो? पण बो सिलख मौको पावताई बन्दूख अर तरवारां की झुंगली पर ताचक कर पड़्यो अर सारी की सारी बन्दूखां तरवारां की बांथ भर कर हिरण होग्यो। अररर······बो जा, बो जा होई, पण बींकै लैर कोई भाग्यो कोनी, सारा जणा ही खाली हाथां हा। जरा सी देर में ई स्यामनै झाड़ां मांय स्यूं दसां ई तगड़ा २ जुवान हाथां में बन्दूखां ताण्यां बठै आ ऊभा होया।

सूत्यां की पाडा जणगी, अब के होवै ? बै लोग सेठां के ठाकरां नै लैण स्यूं सुवा कर बां कै उपर गाभो उढ़ा दियो। बन्दूखां की नाल बां कै सिरां कानी कर कै, दो आदमी खड़्या होग्या, हाल्यानीं अर गोली मांय कर काढ़ीनीं। धाड़व्यां नै मिटाई ·····, सेठाण्यां नै चपक चपक चूंटली, बाकी का लोग सारा एक

कानी बैठ्या, कोई साम ई कोनी काढै । नाथ बाबो भी बोल चालो बैठ्यो देखै ।

एक बाई के पगां में सेकडो भर चादी की माट ही, डाकू खींज लिया, पण कडी नीसरी कोनी । देर लागती देखकर एक बोल्यो, "न नीकलै तो राड को खुरडो काट कर काढ लें ।" दूसर भट तरवार काढी । डर के मारे बिच्यारी बार घाली । बा नाथजी कानी देखकर कूकी, बाबा, मेरो पग काटै है । तरवार स्यूं नली कटती देखकर बडे सै सूरमा का होस हिरण हो ज्यावै, बा तो बिच्यारी लुगाई की जात ही । डाकू आपकी तरवार उठावै ई हो 'क लैरई नाकं स्यू एक गरजनाभी होई, "अब नही सैयो जावगो"। भीम काय नाथ बाबो बाघ की ज्यू उछल्यो अर आपको मोट घुमाकर तरवारिये के भोडे पर दे मारयो, बो तो बठैई ढेर होग्यो । अब बाबो आपको मोट जोर स्यू घुमाणो सरू करयो, जठै पडै मूसल, बठैई खेम कुसल । तीन च्यार बठैई लाम्बा होग्या । बाबै नै मच्यो देखकर बो भाडेतो राजपूत भी आपकी बोदी सी तरवार सूंत कर रण क्षेत्र में कूद पडयो । बात की बात मे पासो ई पलट ग्यो । बन्दूकां पडी रैगी, तरवारा धरी रैगी । डाकू मरया जिका मरया बाकी का बोजां पग देग्या ।

अब ठाकर लोग बैठ्या होया, भाग्या अर लूक्या जिका भी आकर भेला होग्या । सेठ आपको हीरा जड हार उठा कर बाबै के गलै मे घालणो चायो, पण बाबो पांच पांवड़ा ओटो सरक कर बोल्यो, सेठयु ई देणो है तो ई गरीब राजपूत नै दे जिको

आठ आना रोजीना के भाड़े ऊपर आयो, पण आपकी ज्यान त्याग कर लड़यो, ई का तो लुगाई टाबर रूल ज्याता। म्हारो के म्हे तो फक्कड़ हां।

तुळसीरामजी म्हाराज

रामगढ़ की वातां कैंयां ही जाम्रो, नवेड़ म्रावं ही कोनी । ईं भोम को किस्योक ऊदो जाग्यो हो,किस्याक किस्याक दानी, मानी म्रर ज्ञानी पुरष म्रठे पैदा होया, म्राय कर वस्या । हंस जिमां मानसरोवर पर म्रावणो चावं वियां बडा बडा सन्त महात्मा भी ईं नगरी में दूर दूर स्यूं निवास करण नैं म्रावता ई रैंवता तुलसीराम जी म्हाराज भी वां हंसां मांय स्यूं एक हंस हा, हम के परम हंस हा । लिछमी कै रमभोल में रहकर भी लिछमी नै म्रापकै म्रड़ण कोनी दी ।

सेठ हरनन्दराय रूइया रामगढ का राजा जिनक हा । भरयो भंडार, पूरो परवार, पण सेठ पाणी में पोयण की ज्यूं एक दम निरलेप हा । वैलो मे बैठकर म्रापकी हवेली स्यूं नोहरं जावता जद टाबरिया, "दो रिपिया बावाजी, दो रिपिया " कैंवता गैल हो ज्याता । सेठ हांसता २ एक म्रांगली उठाकर कैंवता,"एक रिपियो"। टाबरां को मतलब हो तो 'क बावोजी की विरमपुरी में दिछणा का दो रिपिया मिलंगा, पण सेठजी को कहणो थो- एक रिपियो मिलंगो । किस्याक भद्रीक मिनख हा ।

सेठ म्रापको ज्ञान ध्यान निरवाळा नोहरं में ही करया करता । बठं ही म्रापकं वास्तै पांच खण्डी चन्नण मंगवा कर धर राख्यो हो,

अन्त्येष्टी में जरूरत पड़ैगी । सेठाणी जी ई बात स्यूं नाराज रैवता, यो के मूंग काढ्यो, जीवता थकां ई कोई मुसाणा मंगाया करै है के ? शास्त्री सागर सेठ होतां भी कहता—थे थारा मूंग चोखा नाखो, आपरै म्हानै तो ई काठ में ही जाणो है ।

तुलसीरामजी म्हाराज आं सेठां कै कनै रैवता । सवेरै संज्या ज्ञान चर्चा होती । दोपारां की टेम में म्हाराजजी संस्कृत पाठसाला (छंतरियां में)पढ़ावता । पचासां विद्यार्थी बठैई रैवता, बठैई जीमता। सेठां की तरफ स्यूं पूरो बदोबस्त हो । इसी कई पाठसाला चाल्या करती । न तो शिक्षा विभाग हो अर न हजारां अफसर हा, तो भी बड़ै बड़ै विदवाना स्यूं देस भरयो रैवतो । त्यागी गरू, अनुरागी सिष मिल ज्यावै जद ज्ञान गैल गैल फिरै । म्हाराज जी सेठां का ग्यांन गरू ई कोनी हा, घर विद की सारी बातां का भेदू भी हा। हर काम में वां की सल्ला ली जाया करती । सेठ जाणता आं स्यूं बुरो बिगाड़ कदेई नई होवैगो, होवैगो तो भलो ई होवैगो ।

एक बार लुगायाँ की खट पट स्यूं बेटां में न्यारा होवण की नोबत आ'गी । सेठाणी बार बार सेठजी नै कैवै, पण सेठ ई जंजाल में क्यूं पड़ै ? करणियां धरणियाँ आपै ई आप आपकी नमेड़ो। सेठाणी जादा कैयौ जद एक दिन सेठ बोल्या, तुलसीरामजी म्हाराज नै कहदयो, बै बांटा-बूंटी कर देसी । या बात बडोड़ी बीनणी के जची कोनी । बोल पड़ी, तुलसीरामजी आपणै घर की के जाणै ? बै किसै दिन हीरा-जुंवारात मुलाया हा, हेली नोहरा [illegible]ाया हा ? ये तो आपणै अठै ई बडा सांरा हो रैया है, आगै

म्हाराजजी वठैई विराजग्या । कैंयो जावै है 'क वठै बैठ्यां बैठ्यां ई ब्रह्मरन्ध्र स्यूं उंनां का प्राण प्रस्थान कर ग्या । चमत्कार दिखा कर महात्मा परमात्मा मे जा मिल्या ।

विदवान सगलै ई पूज्या जावै है, ईं बात नै दुनिया देखी पर म्हाज ताणी वातां ईं चालै है ।

राम रतन जी डागै की बात

[सदां की ज्यूं एक दिन वैद्य चन्द्रशेखर जी व्यास (फक्कड़ बाबो) नगर-श्री में पधार्‌या, म्हे बठै ३-४ जणां पैली स्यूं मौजूद हा। फक्कड़ बाबै स्यूं बीकानेरी लहजै में बात सुणन को म्हारो मन कर ही बोकरै। गड्डू बाबै, कुचियै कानै जिस्या महामहिमां री बातां के सागै सेठ रामरतनजी डागै को भी प्रसंग चाल पड़्यो। सेठां की कोमल बिरती, भायां-भायां की गहरी ममता कैवतां-कैवतां बाबो गलगलो होग्यो, म्हे सुणनियां भी चित्राम का......। बात कालजै मांय स्यूं निकली अर कालजै में ही बैठगी। इच्छा होई लिखां, पण बाबै की कैणी गत तो न्यारी ही है।]

बंसीलाल अबीरचंद फारम देस दिसावरां मांय भोत ही मानीजतो फारम है। अबीरचन्दजी का छोटा भाई बाबू रामरतनजी डागा ईं परवार का परभाते नाम लेवण लायक मिनख हा। बीकानेर नैं देख कर धारा नगरी को ध्यान हो आवतो, जठै राजा भोज अर बींकी सभा का नोरतन होया करता।

अबीरचंदजी अर रामरतन जी की जोड़ी राम-लिछमण की सी ही। भाई-भाई सागै ई रंवता, सागै ही जीमता। फारम

को काम मोकलो जगां हो, पण रामरतनजो कदे काम सम्हालन नै दिसावर कोनी जाता। अबीरचंदजी चावता हा 'क भाई आराम स्यूं घर पर ही रवै. म्हारै थका ईंकै ऊपर कंई तरह को बोझ क्यू पड़ै? नगर में सेठ घूमण निकलता अर कंई घर में ब्याह सावो या खरच कावो होतो देखता जणा ओलै ही बेरो पड़ावता 'क ई भाई कै कंई रकम की कठिनाई तो नई है। जरूरत समझता तो आपं ई मुनीम के हाथ जरूरत पूरी करवा देता। गद्दी में बैठ्या होवो, चाहे पूजा करता होवो जद भी कोई याचक आ ज्यावतो तो हाथ को उत्तर ही देवता, अर ईनैं वे भगवान सकर को हुकम मानता।

एक बार सेठ आपकी कोटड़ी (नोहरो) में सवेरै की टैम तेल मालिस करावै हा। एक विरामण कै बेटी को ब्याह थो जिको वो ब्याह खातर पीसा भेला करण नैं नीकल्यो। सेठां कन्नैं भी पूच्यो। कागद कलम कन्नैं क्युई हा कोनी, एक ठीकरी पर कोयलै स्यू १) मांड कर विरामण नैं ठीकरी देदी अर कंयो 'क मुनीमजी कन्नैं जा कर ले लिवो। मुनीमजी देख्यो मिनमंगो है, सो आपकी बाण बरती अर विरामण नैं अठन्नी देकर टालणो चायो। विरामण पाछो सेठा कन्नैं गयो, सेठ १ पर० चढ़ा कर१० रिपिया लिख दिया, पण मुनीम मान्यो कोनी। बामण फेरूं सेठां कन्नैं गयो, सेठ एक बिन्दी और चढ़ादी। एकै ऊपर बिन्दियां चढ़ती गई अर सख्या दस हजार पर पूगगी, जद मुनीमजी कन्नैं बैठ्यो एक स्याणो आदमी कंई 'क मुनीमजी इबकै विरामण नैं पाछो भेजोगा तो रिपिया पूरा १ लाख देवणा पड़ैगा, अभी क्यूं ई देवो नी ? बात

मुनीम जी [illegible] इण प्रकार सिगमण नै
[illegible] ।

सेठ [illegible] संगांधाम, ओगी संकर के मन्दर में दरसण [illegible] गंगा में आधा [illegible] अर दरसण कर के हवेली आवता, हवेली पर याचक लोग आयेड़ा होता जिकां नै वे दानपुन्न देकर जीमता।

मुनीमजी के पेट में आज गड़बड़ो चाल रैयोहो, जाणें हा आज नोकरी जासी। रामरतनजी भी ई बात नै लखग्या अर मुनीमजी नै धीरज देवता मुलक कर बोल्या, मुनीमजी डरोमत, संकर भगवान को योही हुकम हो।

कासमीरी तूस

जिका मिनख माण की सारी जिनगानी मिनखां मांय ई गुजारी, बां की जिनगानी में एक दो नईं, सैंकड़ा बातां इसी निरखिरी बाता की बाता ई धार्मं। सेठ रामरतनजी डागा की भी इसी घणी बातां है, एक बात ऊपर देई है, दूसरी नीचे देई जावै है—

सियाळै का दिन हा, डटार पड़ै, धूमली छूटै। सेठ रामरतन-जी माप की बैठक में कीमती तूस ओढ्या, सिगड़ी स्यामी बैठ्या हा। एक बामण फाटेडी पगरखी पग मेली सी धोती पेर्या सेठां कै दुवारै पर आयो होयो, बोल्यो, "सी मरूं हूं सेठां, कोई मोट लिकळ दिरायो।" सेठ न आळै में सोच रह्या हा, [illegible] दीनो। बामण फेर बोल्यो, "कोई जरूरी मिलगी चालू, बाबू"। पण बात फेर इण सुणी होसी। बामण देखता रह्यो, चाला गेर पायो हो, पण सेठ बाकी ई बोली होसी। आप बापरो दूसरी बार कह्यो "थाप सो तूस में दबर हो रैगो है, इतरै में [illegible] है, सो क्यूं आळो।"

सेठ हाथ पकड़्या, [illegible] पाव की चरन करै हा। [illegible] हाथ की में पाछो बुलायो। सेठ [illegible], तूस उतार कर [illegible] आव ज्यूं बामण कै हाथ पर धर दी। बामण [illegible] देख [illegible] रह्यो। तूस कठेई [illegible] [illegible]। [illegible]

जीमनी तुम भट सं उतार कर देदी, या बात रामरतन जी की भाभी नैं सुहाई कोनी, बोल पड़्या, कमावैं जद बेरो पड़ै।

भाभियां के तानां सें दुनियां में किता'क देवर घायल होता आया है, के गिणाऊं ? श्रां पराई जाइयां के कारणं घणखरं घरां के श्रांगणां के बीचूं बीच भीतां खड़ी हो'गी। भींत कै भी कान होव। बात राम रतनजी ताई पूंचगी, सुण कर बां के मन में विच्यार खड़्यो होग्यो। मिसरी में फांस कियां खटावैं? सरल भाव स्यूं सोच्यो, भाभी ठीक ही तो कैव है, दूसरां की कुमाई पर दाता-री दिखाणी कुणसी भली बात है ?

सागं जीमता जीमता रामरतन जी भाईजी सें बोल्या, "मैं दिसावर जास्यूं, कुण सं दिसावर जाऊं, श्राप हुकम द्यो।"

भाई जी पूछ्यो, "दिसावर क्यु ?"

बोल्या, "इच्छा होगी, श्राप फरमाद्यो कठै जाऊं ?"

भाईजी पूछ्यो, "इसी के जरूरत श्रा पड़ी जिको तन्नै जाणो ई पड़सी ?"

पण बार बार कै कहणं स्यूं भाईजी रामरतनजी नैं मियां-मोर जाणं की श्रग्या देदी। जोड़ी बिछड़गी, राम श्रजोध्या में, लिछमण बनोबास में, एकलां सं हाट बजार जावणो श्रोखो होग्यो, जीमं तो गासियो मुंह में फिरण लाग ज्यावं। बात स्यामनै श्राई, तूस पर भाभी तकरार करी जद रामरतन दिसावर गयो। राम-रतन स्यूं कोई ई घर में तकरार करै, श्रर बा भी तूस के एक पूर पर ? कालजैं में डीक सी उठो, मेरै बैठ्यां रामरतन नै कोई क्युं ई

कह दे ? अबीरचन्दजी आप की सेठाणी स्यूं बोलणो कनई बंद कर दियो।

सेठाणी सारा उपाव कर लिया, पण बात बणी नही। धोलो मन में मावड़े नही, मैं पापण यो के कर बैठी ? भायां बीच बिछोवा करा दिया। पिमतावें की आच में मन को सारो मैल जल बलग्यो, आत्मा कचन सी होगी, भावना ऊंची उठी। देवर देवता सो दीखण लागग्यो। देवर ही यो कलक काटें तो काटें। कागद लिखणनैं बैठी। आखडल्यां का आसू ही आखर बण कर कागद पर मंडग्या।

कागद बांचतां ई रामरतन जी का रू काटा खड्या होग्या। मेरैं कारण भाभी नें इत्तो वडो डड ? कीका खाणा, कीका पीणा, हा जियां का जिया गाडी चढग्या। घर में बडताई भाभी कन्नैं पूच्या, टाबर की ज्यू बिलख २ कर गोडा में सिर दे दियो। जमना जाणें गंगा की गोद में सिमट ज्याणी चावें। पोल में खड़या अबीरचन्द-जी की गीली आंख्या दोन्या में आ मिली तो आगणो जाणें पिराग-राज बणग्यो। सेठ सुभाविक सनेह स्यूं फरमायो, रामरतन नैं हाथ मु ह धोवण दे, तूं जल पान की त्यारी कर।

बाबू रामरतनजी बैकुंठ बासी होग्या, पण मोकैं ठोकैं आज ताणी कैयो जावें है—के रामरतन डागो होरयो है ?

दलजी खिजड़ोलियो

गंठीलो शरीर, न घणो लाम्बो न जावक ओछो, रंग गीऊं वरणो, छोटी धोली खिली खिली दाढ़ी, बदन उघाड़ै, धोती को एक पल्लो टांग्यां दूसरो कांधां पर गेरयां, ढलती उमर को एक आदमी बालाजी तथा श्री सत्यनारायण भगवान के मंदर कानी जावतो आवतो मन्नै रोज मिल्या करतो। सीयालो होवो चाये ऊन्यालो आंधी चूकै न मेह, नित नेम स्यूं न्हा धोकर मंदर जावै। कई दिनां पछै वेरो पड़्यो ऐ दलजी ठाकर है, चूरू सें ७ कोस परै पीथीसर गांव का। कदे नामी धाड़वी हा, आज कालै राय बहादर सेठ भगवानदास जी बागलै की हवेली में रैवै है। बालाजी की स्तुती आपकै बणायेड़ै भजनां स्यूं करै है।

ऐ दो एक बातां तो म्हे भी सुण राखी ही, पण एक दिन नगर-श्री में पं० पूर्णानिन्द जी व्यास सें आंकी दो एक बातां सावल सुणी तो मन करयो—ई वीर की बातां लिखणी चाए। व्यासजी म्हाराज नै ठाकर आप कैया करता, गरूजी में कदे दूसरी लुगाई कानी आंख कोनी उठाई, कीं की पीठ तकी कोनी अर कैंई तरै के नसै-पत्तै के सांकड़ै गयो कोनी। सारा जाणै है 'क जियां नीम कै पेड़ के नीचै दूसरो रूंख नहीं ऊगै, उसी तरियां रजपूती के रंग में दूसरा रस आपको रंग कदेई नहीं जमाणै सकै।

पोथीसर में राजपूतां कै सागै सागै क्यामखानियां को भी पूरो घड़ो है, पोथीसर का कई आदमी बीकानेर राज में ऊंचे ऊंचे ओधां पर हा। दलजी का पिताजी वेगा ही गुजरग्या हा, दो सै बीघा धरती में च्यार पांती अर मामूली पैदावार, सास्ता अकाल पड़ै। पन्दरा बरसां का दलजी गंगा रिसालै में भरती होएण खातर बीकानेर पूग्या। जवानां की भरती देखण, अन्नदाता गगासिंघजी म्हाराज आप पधारया करता, पूछ ताछ करता। दलजी की बारी आई, अन्नदाता फरमायो—नोकरी करणो चावै है ? रजवाड़ी तोर-तरीका को दलजी नै वांनै के बेरो? यो भी बेरो नहीं के सवाल करणियां खुद अन्नदाता है, बोल्या तो के धूल खाण आयो हूँ ? अन्नदाता मुलक्या, दलजी खातर हुकम फरमायो—ईं पोथीसर हाल' खिजड़ोलिये नै म्हारै अठै भेजदयो। दलजी म्हैलात के पहरेदारां में सामल होग्या, अन्नदाता की उनां पर पूरी मरजी रैवती। दलजी को गलो क्यु'ई सुरीलो हो, म्हाराज सा'ब घणी बार उना स्यूं धमाल सुण्यां करता।

व्यास जी नै दलजी आप मारी बाता कैवता, बोल्या एक आदमी अन्नदाता नै पोसाक पहराया करतो। एक दिन बी की लुगाई तीन च्यार बर गेट स्यूं आई गई, मैं पहरै पर हो। मुंह आगै कर आवै जावै जद देखणो तो हो ही ज्यावै, पण वीं लुगाई के धणी के क्यु'ई वहम होग्यो, महल में नीचै आयो। बोल्यो न चाल्यो अर मेरै दो तीन मुक्का-थप्पड़ आया जिस्या मार दिया।

[illegible] जाणे [illegible] अन्नदाता [illegible] है, पण दलजे कै [illegible] निशानी [illegible] पाळी अर बन्दूक को बट माथै पर मारया [illegible] अन्नदाता [illegible]। आवाज आई "हूं"। [illegible], पोजीशन मे खड़यो होग्यो। पूरी बात सुण कर अन्नदाता [illegible] गोलै नै [illegible] धमकायो 'क सुन्नो होग्यो।

दलजी बीकानेर रैवता अर वां के घर का बाकी मिनख पीथीसर में ही रैवता। दलजी की आनरया भी घणी बडी कोनी ही। गांव में इस्यो कोई मिनख नही हो जिको ई दलजे घर नैं बांह को सा'रो देकर राखतो। भिड़ूवां क्यामखानी को गांव में पूरो दब दबो हो, बो दलजी हारै घर पर आपको अधिकार जमा लियो।

दलजी सदां की ज्यूं पैरे पर खड़्या हा, डाकियो एक चिट्ठी ल्या कर दलजी नै दी, गांव स्यूं आई ही। चिट्ठी खोली, बांची कोई हितू घर का हाल लिख्या हा दलजी किरोध अर रंज स्यूं भरग्या। दजली घणा उदास पैरे पर खड़्या। अन्नदाता कठेई वारै पधारण खातर हेठे ऊतरया। कायदे मुजब दलजी सैल्यूट दी। घण्यां को ध्यान दलजी के चेहरे कानी गयो तो रुक्या, पूछ्यो "जुवान उदास क्यूं है ?" पण दलजी दुःख सें भरया पड़्या हा बोल नई सक्या, जेब स्यूं चिट्ठी काढकर अन्नदाता जी के हाथां में थमा दी।

मोटा मोटा मुंधारा, भारी भारी कटारा सी मूंछया, गौर वरण, चेहरे स्यूं तेज टपकै, कानी आंख्यां नईं उठै, अन्नदाता जी उभा हा, जाणें रजपूती रूप धार कर ऊपर स्यूं ऊतरी है। कागद की एक एक ओली पर आंख्यां का डोरा खिचीजण लाग रैया हा। फरमायो, क्यु ईं करणं की हिम्मत है ? दलजी बोल्या, खम्मा घणी अन्नदाता, धण्यां को सिर पर हाथ है तो वार कोनी लगाऊं। इसारो होग्यो।

बदोवस्त होतां के वार ही ? मगा रिसालै को टालवां टोरडो, बन्दूक अर तरवार हाथूं हाथ मिलगी। दलजी दिन छिपे पैली ६० कोस धरती काट, पीथीसर के गोरवै आ ऊभो होयो। एक दो जणां की निगं भी पडी, पण दलजी गाव वारै गुमाणां में टोरडै नै अंतराय कर अ धेरो पडनै की वाट देखै लाग्या। अ धेरो पडग्यो जणा छापलता छापलता गांव में वड्या।

दलजी आप की तरवार की नोक स्यूं सींये नै जगायो सो सीयो थकरायेडै सिंघ की ज्यूं उठ्यो। दलजी नै गडयो देखकर थोडो पण स्यूं बोल्यो, अरै दलिया ? तू अठै मरण नै क्यु आग्यो ? इसी कहकर आपकी पोलादार लाठी कानी भाज्यो, पण ईं बीच दलजी सीये की नाड ऊपर एक वार कम कर करयो अर सिर मतीरो सो परै जा पडयो।

अब दलजी आपकै ऊंट कन्नै आया अर ऊंट भी टाल्वां ईं हो, २४ घंटा में सैकडो कोसां की मजल काटल्यै, पण आगर

हो तो हाट मांग को बगोड़ो ई। बीकानेर सूं उरलैं नाकै गाढ-वालै कन्नै पूंगतां पूंगतां ऊंट बेदम होग्यो, एकर कांप्यो अर पड़तां ई ऊंट का पिराण पंखेरू उड़ग्या। ओड़ी बरियां आडो आवणियै साथीड़ै नै रोही में मूक्यो छोड़तां दलजी को हियो भर आयो, पण दिन ऊगे ई ड्यूटी पर हाजर होवणो भोत जरूरी हो। ईं खातर ऊंट का गदिया, कूंची तो दलजी आप के कांधै पर टिकाया अर बठै सेती दड़बड़यो जिको आठ बजे हालै पहरै पर जा हाजर होयो।

मीयें के कतल होणै को रोलो तो घणो ई उठ्यो, पण के आणो जणो हो? हाजरी के रजिस्टर में दलजी की हाजरी बरा-बर लागेड़ी ही, जद या बात कइयां मानणी में आवै 'क दलजी १२५ कोस को गैलो काट कर रातूं-रात पाछो आग्यो। वीं कन्नै किसी हवाई झ्याझ हो? दूसरां दरबार को इसारो थो जिको बात बठै की बठै ई रैयगी।

दलजी ठाकर एक बर रामू ढोली सागै घाड़ो मारणै की फिराक मे कठैई जावै हा । रामू ढोली दलजी के सासरै कानी स्यूं सैंदो होय्यो हो । आछ्यो गाबरू जुवान हो, ऊंट नैं हथेली पर उठाकर ऊंट को मुंह पूरब स्यूं पच्छम फेर देतो । ऊंट ऊपर दोनूं चल्या वगै । सिरदारसैर की रोही में एक जुवान लुगाई उंबार में खड़ी पालो भाड़ै, सारै ई दो सांड्या चरै । सांड्यां सजोरी ही, देखकर रामूड़ै को मन चाल्यो । बोल्यो ठाकरां, चोखैं सूणां चाल्या हां, उतरो, एक मैं पकड़ूं हूं, दूसरी नैं थे टोरो । ठाकर बोल्या, लुगाई कन्नैं स्यूं खोसा झपटी करणी आछी कोनी, आगी नैं देस स्यां । पण आस्यां आगै पांच सैं को धन खड़यो, छोड़यो किया जावै ? रामू मानी नही अरं एक सांड के मूरी घाल कर पकड़ ल्यायो । दूसरी नैं ल्याण गयो जद जाटणी आपकी जेळी सामकर आगै खड़ी हो'गी । ठाकर तो ढोलीड़ै नैं धोरूं बरज्यो, पण बो के जोर सूंसावै हो । मूरी घालण लाग्यो तो जाटणी भुंभाय कर जेळी फटकारी जिको रामूजी को मुंह धूल में गडग्यो । ठाकर बोल्यो, स्याबास ।

ढोलीड़ै का कांन खीचकर ठाकर बीनैं बैठ्यो करयो । जाटणी एक कानी खड़ी धूजै । ठाकर बोल्यो, डर मतना लाडी, पण करी जिसी पाई, जा तूं तेरो काम कर ।

एक दिन दलजी आप के ऊंट पर चढ्या गांव ······के कुवै पर ऊंट नैं पाणी प्यावै । कुवै पर मोकळा आदमी ऊभा, पणिहारयां पाणी भरै, इतणै मे एक जुवान सी बहू सिर पर दोपड़ लियां

ठाकर को ऊंट भागी बानड़ी अर ऊंट की मुरी पकड़ कर आपके घर कानी चाल पड़ी । ठाकर सरद में आग्या, यो के अडंगो है? या कुण है?

गुवाड़ में कई मिनख बैठ्या हुक्को पीवें हा, बीनणी तो आपकै घर में चली गई अर ठाकर आपको ऊंट पकड़्यां आदमियां कनै खड़्यो होग्यो । ठाकर क्युंई सोच नई सकगो 'क के बात है? घर मांय स्यूं एक बडेरो आदमी बारै आयो, नाम धाम पूछ्यो अर बोल्यो, बीनणी थांनै भीतर बुलावै है, ठाकर कै अचंभो नादड़ै कोनी । ऊंट नै बांधकर भीतर गयो, बीनणी आपको घूंघटो खोल्यो अर बोली, बाबाजी थारै उपगार नै भूलूं कोनी । थे ही जिकै दिन मेरी लाज राखी, मेरी सांड्यां राखी । अब जीम कर जावण देस्यूं । ई घटना को ठाकर पर घणो असर होयो अर जद पीछै चोरी धाड़ा छोड़ कर भलै मिनखां में रैवण को ध्यान कर लियो ।

राजपूत की माँग

सिवाजी के वास्तै एक मुसलमान इतिहासकार कँयो है 'क सिवाजी आंधियां स्यूं खेल्या करतो, तोफानां पर चढ्या करतो। दलजी की जिन्दगी में भी इंयाल की बातां कई वरियां गुजरी, दूसरो कोई दलजी की जगां होयतो तो कदेस को उड ज्यातो।

दलजी गंगा-रिसाले की नौकरी छोड़ दी, बंधण में रहणो सुहायो कोनी। गांव (पीथीसर) में कई कारणां स्यूं रंवणो होतो दीस्यो कोनी। सिरदार दोय च्यार साथ्यां नै लेय'र धाड़ो धपियो करै लाग्या। बुरै काम का बुरा नतीजा, पकड़्या गया तो गंगासाही जेल में रोजीना अठारा सेर पीसणो पल्लै पड़्यो। पण दलजी कै सरीर में पोरष' अणथाक हो, अठारा सेर को पीसणो घड़ी'क में पीस कर कूठो कर देवै। दलजी कै सारै ही एक मुसल्मान कैदी नै भी इत्तो ई पीसणो दियो जातो, पण क्यूंईं तो बो मुरदार हो अर क्यूंईं हरामी हो।

निगरानी पर जमादार भी एक मुसल्मान हो। एक दिन जमादार दलजी स्यूं बोल्यो, "तूं तेरो पीसणो पीस्यां पछै ईं नै भी म्हारो लगाया कर।" दलजी बोल्या, क्यूं, ईं के बाप को नोकर हूं के? आपसरी में तकरार बढ़गी। जमादार आपकी जमादारी के जोर पर कावल सावल ले उठ्यो तो दलजी क्यां को सवै? आब

देख्यो न भाल, भयावकर औजार एक कनपटी पर बैठ्यो, जिको जमादारजी को साथो सीधो उल्टो कान्नै आ पड़्यो, गाभा भर दिया। सबकी शिकायत होई, पण मान नै के आंच ही? दलजी को न्यारो कोठियां के ग्मोगड़े में कर दियो।

ग्मोगड़े की कोठियां में रामसीसर का एक ठाकर भी कैद आयेड़ा हा, दलजी की बात सुण कर अचरज कर्‌यो अर राजी भी होया। साथ्यां के बीच में बोल्या, इसै राजपूत नै आपकी बेटी ब्यावणी चायै। होणहार बलवान। ठाकरां के ही ब्यावण सावै बेटी ही, बातां-बातां में सगाई की बात पक्की होगी। जमादार की ठुकराई, दल्लै की सगाई! भगवान की माया विचित्तर है। दलजी सगाई की बधाई में दो रिपिया उधारा लेय कर अम्मल मंगायो, अम्मल गल्यो अर सारा साथी अम्मल कर्‌यो। ठाकर बोल्यो जेल स्यूं छूटतांई ब्याव कर देस्यां। सगाई की बात च्यारूं कांनी चली गई।

रामसीसर का ठाकर कैद स्यूं क्युंई पैली छूटग्या, आपके घरां पूग्या अर बाई की सगाई की बात कैई तो घरकां के जच्ची कोनी। घर का ओलमों दियो, यो के सगारथ ढूंढ्यो? आखर आप की बडी बेटी के देवर स्यूं दलजी की मांग की सगाई करदी दलजी भी कैद स्यूं छूट्या जद सुणी 'क थारली मांग तो दूसरै नै [illegible] है, अर ब्याह भी भोत सांकड़ो ई है। दलजी नै रीस [illegible] ख भी होयो, पण उपाय के करै? आखर [illegible] जी को आसरो लेणो चाए। दलजी

याया तो वेरो पड़्यो 'क अन्नदाता गजनेर
ी कन्नै कुणसी मोटर हो ? पगाई फटकारो
र जा लिया ।

ायो, अन्नदाता झील के किनारै टैलावै है । दलजी
। अन्नदाता के सारै ठा० गोपसिंघजी ऊभाहा,
ान, जाणं अन्नदाता के सागै ई विधाता
ो घड़्या हा के । दलजी नै तोर को ज्यू भावता
जी सामा आया, पूछयो तो दलजी सारी बात
बतायो । गोपसिंघजी पाछा जाय अन्नदाता नै
ा घणी अन्नदाता, दलजी खिजड़ोलियो है, आपनै
रतो, ईं की माग नै दूसरो ब्यावै है, आपका
दलजी अन्नदाता के आगै पेस होया, आई जिसी
दी ।

ा फरमायो, राजपूतां में बात पलटणै की बाण
भोत बुरी बात होवैगो । सिरदारसैर के तहसीलदार
दियो, ठाकर ठीक स्यू नईं मानै तो गांव खालसै
र लड़की नै ल्याकर दल्लै स्यू फेरा दे दिया
स्ती हुकम लेकर बो पगाई सिरदारसैर पूग्यो ।
रजी स्यू मिलण नै उतावलो, पण फाटे भेपां
ो सो तहसीलदारजी कन्नै आवण दे । बठै ई
वयामखानी सिपाही खड़्यो हो, दलजी नै सिकस्त
ाणं हो, पण नाव घणी बार सुणेड़ो हो । बी मत्तै

आदमी दलजी नै तहसीलदारजी कन्नै पूगतां कर्‌यो । दलजी दरबार को हुकम नांमों पेस कर्‌यो, तुरन्त फुरत कारवाई होई। बठीनै फेरां को ब्यारो हो रैई ही, इन्नै स्यूं तहसीलदारजी दलजी नै तथा सवारां नै साथे लेयकर रामसीसर पूंच्या । ठाकरां नै दरबार को हुकम नांमो दिखायो, देखकर ठाकर सरद में आग्या । अयेड़ी वरात बैठी रैई पर दलजी चंवरी चढ्या ।

---

१. पं० चन्द्रशेखर जी व्यास बताई 'क मैं स्वामियां के ब्याव पर एक बार पीथीसर गयो हो, स्वामी म्हारा जजमान है। और भी भोत लोग बैठ्या हा । दलजी भी बठै आग्या । बीं जगा गुंवार रांधणे को एक 'लो को कुड़छो पड़्यो हो, जिकै नै हाथ में लेयकर दलजी बैठ्या बैठ्या संठोली के बल देवै ज्यूं बल दे कर साम्बो कर दियो । मन्नै घणो अचंभो होयो, जद एक आदमी बोल्यो, ब्यासजी ये दलजी है। दलजी को नाव तो सुण राख्यो हो,पण देखण को मोको जिकै दिन ई लाग्यो। फेरूं बो आदमी दलजी नै राणी विक्टोरिया हालो १ रिपियो दियो अर बोल्यो, ठाकरां ई रिपिये नै परख द्यो । ठाकर रिपिये नै दो आंगलियां पर धर कर अंगूठै को जोर लगायो तो रिपियो मुड़कर ढीवसियो बणग्यो, इत्तो पुरषारथ हो बीं आदमी में ।

छोटू म्हाराज की बात

बीकानेर रियासत में रेल आवणें स्यूं पैली दिसावर जायणियां लोग चूरू सें भ्याणी या नारनोल जा कर गाडी पकड़्या करता। बठै ताईं की मुसाफरी ऊंटां पर ही होनो। रस्तै में आराम के वास्तै सेठ भगवानदासजी बागलै की धरमसालांवा कई जगां बणामेड़ी ही। साठ्या कोसा को गैलो, चोर धाड़व्यां को डर बण्यो ई रैवतो। सामरथ सेठ साहूकार जावतै वेई आपके बिसवासी ठाकर लोगां की बोलाई राखता, बाकी का आपकी हिम्मत अर भगवान के भरोसै चाल्या करता।

छोटूराम जी बिरामण चूरू का ई हा, पतल्यामा, लांबी लांबी मूंछ्यां, सिरपर दुमालो, हाथ मे लाठी राखता, पाटीला भीत हा। स्यामनै पांच आदमी लड़्या, होवता तो भी मन में धड़को कोनी ल्यावता, सीसा गोली की ज्यूं आवता। आदमी अ तो ढोल स्यूं डुग्यो आवै अर न ढोल स्यूं। पूछोवली हामी ओलमाउरा होभै है किरको, जिको छोटूजी मे धपाऊ को हो। छोटूराम ऊंट राख्या करता अर भाड़ै आया करता। भाई बेट्यां नै स्यासरै मेलवाणै को काम सारूं पड़तो रैवतो। छोटूजी का साथ सैसा बान्धा निधाम्भा हा, भरोसै का आदमी हा। सेठ साहूकारा नै पूरो बिस्वास हो के छोटूराम जी सागै होतां फेर कठूं ई डर कोनी।

माप है, बीको मदद करणो चाए। यूं सोचकर छोटूजी आपकी पोलादार लाठी कांधे पर साध कर एक कानी खड्या होंग्या। सेठ मांकड़े सी भ्रायो, लागा बार कर फिर्या, "छोडदे, छोडदे।" सागे हाला तरवारिया एक बार तो सिर सम्हायो पण रीठ बाजण लागी जद बोजां में पग देग्या। सेठ, सेठाणी भर टाबरियां एकला खड्या धूजे। कैई नै बेरो कोनी हो के भठै एक भौर मरद लग्यो खड्यो है। छोटूजी आपकी पोलादार लाठी नै धुमावता बीच में कूद पड्या, खांखटिये डील में जाणे बीजली भरी पडी ही। तुरल मचा-दी। लागे जिको ई धूल चाटतो दीखे। धाडवी छोटूराम नै जाणे हा, बोल्या, बामणियां तेरो म्हे के खोस लियो ? तूं क्यू भाठे तलै मिर माडे ? पण छोटूजी क्यांको माने।

धाड़व्यां का ऊंट भी भोत सिखाया पढाया होवे है। छोटूजी नै काबू में करणे खातर एक धाडवी आपके ऊंट की ठोकर छोटूजी के मरवाई, छोटूजी पडग्या, पण फेरु उठ, खड्या होग्या। दूसरी ठोकर फेर पड़ी, भ्रबके उठ्यो कोनी गयो। छोटूजी जमीन पर पडग्या भर धाडव्यां की तरवार्यां छोटूजी पर, छोटूजी नें सांगो-पाग छांग गेर्यो।

करम जोग की बात, छोटूराम जी जिकी बाई नै भाप हालं ऊंट पर चढ़ा कर बूंटिये कानी भौर करी ही, बा देख्यो के बाबो तो भ्रायो कोनी, गैलनें के करतो रह्ग्यो ? बा ऊंट नै पाछो मोड़ दियो भर पाछी बठेई भा पूंगी जठे सुवागत करणियां त्यार खड़ या हा। छोटूरामजी पड्या पड्या देखता रंग्या, या मण होणी

कियां होई, मेरलो ऊंट श्रठै पाछो कियां श्रायो ? पण निजोरी बात, धाड़वी मारो मालमत्तो छोटूरामजी हाले ऊंट पर धाल कर जाता रेया। छोटूराम जी महीना छः स्यूं खड़्या होया।

"परोपकाराय सतां विभूतयः" की वात वीं दिन साम्प्रत देखण नै मिली। बोलाई की वातां चालै जद छोटूराम जी बिरामण याद जरूर श्रावै।

लाख रिपियां की बात

जणनी जणै तो दोय जण, कै दाता कै सूर।

मालूम होवै है ई बात नै कैणं वालो कवि कठैई कंई ओढर-दानी नै दोनूं हाथा बरसतो देख्यो हो। वखत पड़्या जिया सूरबीर आप को सिर देतो वार कोनी लगावै, बीयां ई मोको आया दातार भी आपकी झोली भड़कावतो आगो पीछो कोनी देखै। सेठ सोहन-लालजी दूगड़ खातर देखतां देखतां मेरी इसी ही धारणा बणगी। झोली भड़काणियां दातारा मे आजकाल ऑं नै नम्बर एक मानूं हूं। मन्दर, मंजत, गिर्जा,गुरु-द्वार नै सेठ की कुमाई का मोटा भाग विना भेद भाव के मिल्या है तो सभा, संस्था, क्रान्त्यां अर कंदधा तकायत का हाथ सेठ की हांडी मे रैवता आया है। राज अर रैय्यत का वड़ा वड़ा कर्णधार दूगड़जी के दयादान का अभिनन्दन पत्र पढै है तो गाव के किनारै खड़ी खुड्यां में सेठ की दियेड़ी सोड़्यां ओढ्या गरीवां का टाबरिया भी ई मिनख का गीत गावै है। सेठजी के बारै में साथी संगलियां स्यूं मोकली बातां मिलो, पण अठै मैं आप बीती एक वात बताऊं हूं, जिकी सें सेठ सा'ब की उदारता के सागै बांकी ब्यौहार कुसलता को भी बेरो पड़ै है।

बात सन् ५३-५४ की है। बागला हाईस्कूल में श्री बिसेसर-

दयाल जी गुप्ता हैड-मास्टर हा। स्कूल में कई बातां की कमी ही। टाबरां खातर पाटिया, टाइप राइटर वगैरा, खेल को मैदान तो गायां की गुवाड़ ही हो, बीं के च्यारूं मेर लोवै का तार लगज्या तो क्युं ई रूप सुधरै। योजना बणी, अढ़ाई हजार रिपिया होवै तो काम सरज्या। बातां कई नरै की चाली, पण आखर सेठ सा'ब कानी ध्यान जम्यो। साथी मास्टर बोल्या, बिहारी ई खेल नैं पटावै, पूरी सम्मति स्यूं प्रस्ताव पास होग्यो। जात को बामण, काम मांगण को, अब के चिन्त्या, गुप्ताजी नचीता होग्या

धन्धो मेरै डोल सारू ठीक ही सू प्यो गयो हो। पण ई कला नै पैली कदे वापर कर कोनी देखी ही, जिकै स्यूं मन ओटो ओटो चालै हो। "मरज्याऊं मांगूं नहीं, अपणे तन के काज, परमारथ के कारणे मोहि न आवै लाज।" ई कंवत का सैंकड़ी इंजेक्शन मारया, जद क्युं ई आगी नैं पग ऊठ्या। दो विद्यार्थियां के सागै जैपर में सेठां की जूरी बजार हाली गिद्दी में जा खड़्यो होयो।

सवेरै की टेम ही, सेठ गिद्दी में विराजमान हा, राम रमी होई। गुप्ताजी म्हारै लोगां को परचो देकर पूरी बात टाइप करवा दी ही, रुख देखकर कागद सेठां नैं झलाया। सेठ क्युं ई बेदमाल सा दीखं रैयां हा, खांसी स्यूं परेसान हा। कागद पढ़्या, मेरै स्यूं बात की निगै करी। कागद ओटा देकर फरमायो, "मेरी इच्छा कोनी।" दो बार कहणे की मेरी भी वाण कोनी, झट कागदां नैं गोजै में घाल कर टाबरियां नैं कैयो, उठो-बेटा, अर खटा खट पैड़्यां उतरग्या।

मेरै मन में जरा भी दुःख नईं हो, सोच्यो, रामलीला, रासलीला अर गऊसाला कें नांव पर नें जाणै किती'क भात का भला आदमी ईं मिनख नें स्यारता होसी । सेठ तो गुगा की खुली धारा ईं है, जरूर मेरै में ईं कोई कमी रंईं है । नीचै सड़क पर आया ईं हा 'क ऊपर स्यूं मुनीमजी ठहरणै खातर कंयो । दो एक मिन्ट में सेठ भी नीचैं आया, आपं राम रमी करी, बोल्या थे लोग चूरू स्यूं म्हारै अठै ई आया हो ?" मैं उथलो दियो, "जी हां, दो म्हीना स्यूं अठीनैं हा, बेरो पड़ता ईं सीधा आपकी सेवा में..........।" जबाब में इत्तो कहतांईं सेठ मोटर कानीं इसारो करता बोल्या; अब थे म्हांरा मेहमान हो, चालो मोटर में बैठो ।

रस्तै में सेठजी आपकी की रुचि को सब्जी तरकारी खरीदी अर मोटर कोठी पूगी । सेठ आप स्यामनैं मूंढै पर बिराज कर म्हांनै घणैं सनेह स्यूं जिमाया, खाटो सुपारी लेकर म्हे लोग सीरहोण खातर नमस्कार करी तो आप गंभीर भाव स्यूं पूछ्यो— ".................. मास्टरजी तीन जणा जेपर आया, के लाग्यो ?"

मैं उथलो दियो, " जी आणैं जाणै में पचास'क रिपिया पूरा होसी स्यामी । "

सेठ फेर पूछ्यो, " चूरू में किता'क लखपति किरोड़पति है ?"

उथलो दियो, " जी लखपति तो घोलाईं है, पांच सात किरोड़पति भी—। "

अब सेठ जबर'र बोल्या, "पचीस में रिपियां खातर पचास रिपिया पूरा करकै तीन आदमी इत्ती दूर आया, दो महीना इंतजार करच्यो;

सो कै तो आप आदमी चोखा कोनी, कै आपकी इस्कीम चोखी कोनी। अर कै बो गांव चोखो कोनी जद इत्ती बड़ी बस्ती में इतणा सा पीसा कोनी मिले, जद म्हे भी क्यूं देस्यां ?"

लो'वे को नानो टुकड़ो जिनो ई कूट्यो पीट्यो जावै, बित्तो ही लांबो-चोड़ो होतो जावै। मेरो मन भी डूगड़जी की करारी चोटां स्यूं बडो होतो गयो। सही सोचणो, साच कहणो, यो भाव आत्मा में उठ्यो। मैं भी बित्ती ही गहराई अर अदब स्यूं बोल्यो, "सेठ सा'ब आप मन्नै लाख रिपिया दे दिया, मैं जाकर देख स्यूं तीन्यां में कुण न्याऊ है ?" राम रमी करके तीनूं जणां दरवाजै स्यूं बारै निकल ग्या।

मेरी मानता है 'क गरू, पिता अर कवि आं तीन्यां की कड़वी बाणी में भी मोकलो हित भरयो रैवै है। "उतिष्ठ जाग्रत" की ललकार स्यूं न जाणैं कित्ताक चेतो करयो है। आज मेरी आत्मा में भी ऊंची भावना ही काम करै ही, सही बात सोचै हो, सही दिष्टी स्यूं देखै हो। सेठ मेरै मन में और भी ऊंचो लागण लागग्यो। स्कूल में आयो, पूरी रपोट देई, मिठास भरी मजाकां उडी, पण पांच सात साथी कमर कस कर खड़्या होग्या अर दो तीन दिनां में ही काम पार पड़ग्यो।

❖ ❖ ❖

दो म्हीना करीब बीतग्या। एक दिन संज्या नै मैं स्कूल स्यूं आरयो हो 'क सेठ चन्नणमल जी पारख की हवेली आगै कई हरि-

जन भाई खड़्या-बैठ्या दीख्या। सोच्यो, ईं हवेली के आगै आं को के काम? बेरो पड़चो 'क सेठ सोहनलालजी दूगड़ आयोड़ा है। सुण कर आगोनै भीर होग्यो, चालतो बग्यो, पण मनकरै 'क दरसण करूं। जैपर में सेठां नैं बेदमाल सा देख्या हा, अब कियां है, देखूं। सेठ तो राजस्थान को रतन है, ईं अंधेरै घर को दीयो है। नया नया भाव मन में आवण लागग्या, पग थमग्या, पाछो मुड़ग्यो।

हेली में होलै होलै चढ्यो। पन्दरा साल स्यूं हेली के आगै कर बगै हो, पण हवेली के मांय पग टेकण को आज पैलो ई मौको हो। सोचै हो, क्यूं जाऊं हूं? कोई सुवारथ? नही! मुलाकात? नहीं, कठै एक किरोड़पति, कठै मैं? तो? आदमी, आदमी कनै जावै, के बुरी बात है? अर आदमी भी इस्यो काजबीज के जिकै स्यूं धरती ओपै। साफ मन, सौ गुणी हिम्मत स्यूं ऊपर चढ़ग्यो।

देखतां ईं श्री रावतमलजी वैद बोल्या, आओ मास्टरजी। बैठक में मसंड के मारै सेठ बैठ्या हा। स्यामनै एक कानी बैदजी अर दूसरै कानी भाई नेमचन्दजी मणोत बैठ्या हा। मैं गिदरै के एक कूणै पर बैठण लाग्यो, पण सेठ मरकता सा बोल्या, "अठै बैठो, गरू तो आप की जगां ईं ओपै।" आग्रह में स्नेह को जोरहो, ओप्यो तो कोनी, पण वां बठायो जठै बैठणो पड़चो। बातां चालै ही, फेरूं चालै लागी।

नेमचन्दजी मणोत जोर दे रैया हा के आज संज्या को भोजन म्हारै अठै आरोगो। सेठ ना'ब फरमा रैया हा,भाजी मा का दरसण करण नैं जाऊंगा जणा दूध बठैई पीऊंगा। जीमणै की बात

रावतमल जी स्यूं पड़ी ओगेड़ी ही । डूंगड़जी दूध पर ही जम्या रैया तो मेरै मन मन में भी कपट उपगी । सेठ जी मन्नै सिखाण्यो कोनी, या बात साफ दीखै ही । मैं सोचै हो, कियां याद दिराऊं के मैं जैपर में आपके हाथ में ओगेड़ो हूं । मगोनजी कानी मुड़कर मैं बीच में ही बोल पड़्यो, "भाईजी दूध की बात ही राखो ।"

घर को वोट विरोध में पड़तो देखकर मगोनजी कैयो, "वाह मास्टरजी, वास का होकर या के बोल्या ? मैं तो देखै हो सा'रो लगास्यो ।" मैं बोल्यो भाईजी, भोजन अर दूध के आग्रह को तो मेरो डोल कोनी, पण मेरो मुआरथ इत्तोई है 'क मैं भी थारलै दूध में म्हारलै घर को थोड़ो सो पाणी मिलाद्यूं तो क्युंई उरिण हो ज्याऊं।" बात फीकी ही, पण मौकै की होणै स्यूं नीकी होगी। रावतमलजी पूछलियो, "यो कुणसो रिण है ?" मैं थोड़ै से में जैपर वाली बात कहदी । सेठां के भी बात याद आई, बोल्या, "दो लड़का भी आप कै सागै हा ?" रावतमलजी बात नैं उठाली-राज की रीत तोत स्यूं लड़कां की हड़ताल होई, आप सौ रिपियां को काठ दियो हो; ईं प्रसंग में मास्टरां के उद्योग की बात भी कह गेरी । सेठ ध्यान स्यूं सुणै हा, सेठां को कोमल सुभाव तो हो ही, बात की सच्चाई अर वातावरण को असर भी होयो । सेठ गंभीर भाव स्यूं बोल्या, रावतमलजी, मेरै स्यूं एक पाप होग्यो, मास्टरजी जरूरत पर म्हारै घर गया अर मैं इन्कार कर दियो ।

मैं धृष्टता करी; बीच में ओजूं बोल पड़्यो, "सेठां, आप म्हानै लाख रिपियां की शिक्षा दी ही, अठै आवतां ईं अै

म्हाराणं म्हारी इच्छा पूरी करदी।" सेठ बोल्या, नहीं, अपराध होग्यो हो, अब आप फरमावो, या समस्या सुलझगी के ? मैं कयो, "आपतो खुला भंडार हो, सबकी भावना पूरी होवै है, फेरू जरूरत होवेगी तो...... ।" पण सेठ मान्यो कोनी, बोल्या "नहीं, तड़के मैं स्कूल में आऊ गा, प्रायश्चित तो करणो ई है । सेठां के नेत्रां में सद्भाव उमड़तो देखकर मैं भी गलगलो होग्यो।

इजाजत मांग कर सीधो गुप्ताजी के घरा गयो, सारी बात बताई। सुणकर वें फौरन मिलण नै गया । म्हे लोग परोग्राम बणायो के सेठजी नै ल्यावणं ताईं हेडमास्टरजी खुद तांगो लेकर जावें। पण दूसरे दिन ठीक ग्यारा बजे सेठजी खुद ही पांच सात भलै मिनखां सागै स्कूल में पूंच्या। म्हे तो सोची ही 'क सेठजी के स्वागत लायक सामान सजोवांगा, पण माथल भिर बिछायत भी कोनी कर पाया हा 'क सेठजी आपंई पधारग्या ।

सेठ सा'ब के अनुरूप सत्कार तो म्हे क्युंई नई कर सक्या; पण जो क्युंई भी करयो वो वानै भोत सुहायो । आपके भाषण में आपके मनकी सारी विथा उडेलता होया घणो पिसतावो करयो। एक विद्वान् के सागै आपकी ओपमा वा इसी तुच्छ वस्तु स्यूं देई 'क लिखी नहीं जा सकै। हिरदै के उद्गारां सागै थली को मूंह भी खुलग्यो, दो टाइप राइटर, पांचसै रिपियां की नई विचार धारा की साहित, टाबरां नै सौ रिपियां की मिठाई, अनेक छात्रां नै कितावां अर कपड़ां को खुलो हुकम ।

बस्तु की मात्रा को मोल नई, बीकै गुण को मोल होवै है ।

वीं दिन दान की जिकी परिभाषा [illegible] नैं मिली, वा अनोखी ही। गिणियां की गिणतकार नैं [illegible] मानण की रिमझिम मानली जावै तो मेह गांव नै नांदी को बादल ई कैणो चाहिजे। इकाई दहाई स्यूं लेकर [illegible] [illegible] को पूरो लेखो जोड़्यो जावै जद बेरो पड़ै '[illegible]' [illegible] गं पूतनै में किसीक करामात है।

× ×

एक बात ओर याद आ'गी, कंये बिना कोनी रंयो जावै। गुप्ताजी के वगत की ही बात है। स्कूल फल-फूल रैई ही, हर साल सैंकड़ी की संख्या में छात्र बढ ज्यावता। वाणिज्य प्रधान विषय हो, पण टाइप-राइटर नैं होणैं स्यूं छात्रां की भरती रुकगी। ७०-८० लड़का वेकार फिरै। संजोग स्यूं वीं वगत का शिक्षा मंत्री श्री नाथूराम मिर्धा को पधारणो होयो. श्री कुंभारामजी आर्य भी सागै हा। स्कूल के आंगणे में नागरिका, शिक्षकां अर विद्यार्थियां के बीच खड़्या होय कर मंत्री जी फुरमायो, "इन सब छात्रों को भर्ती करो, आपके पास सात मशीनें जल्दी ही पहुँच जाएंगी।" खुसी में तालियां बाजी। हुकम मुजब मंत्री जी को पी०ए० आपकी डायरी में या बात नोट करली। दूसरे ही दिन मारा लड़का भरती होग्या, पण टाइप राइटर कठै ? दो म्हीना बीतग्या, स्कूल में हड़ताल होगी।

गुप्ताजी कै जगाणै स्यूं ओजूं नई उमंग जाग पड़ी। झोली उठाई अर टाइप राइटर ल्यावण नै कलकत्तै पुग्यो, साथियां स्यूं

जाय जे रामजी की करी । भाई रावतमलजी पारख के सागे वालीगंज गयो हो; रस्ते मे सेठ सा'ब की कोठी आई तो भाई जी बोल्या, "दूगड जी स्यूं मिलां, आज कालै तबीयत क्युंई नरम है।" मिलणे की भावना तो मेरै मन में भी कई बार आई ही, पण ईं टाइप राइटर मांगणे के सिलसिलै में जाणो ठीक कोनी समझ्यो। इब घर के आगे आया फेर किया रैयो जावै ? ऊपर गया, सेठ सा'ब बैठ्या एक छोटो सो काकड़ी छोल रैया हा । सेठजी आवभगत देई, कुशल प्रश्न होया । इब कै मन्नै ओलख लियो, काकड़ी बाट कर खाई, उठता उठता मेरै आणे को प्रयोजन पूछ लियो ।

मैं तो मेरी मंगता गिरी की बात नही कैणी चावै हो, कारण, जिकै मिनख कै धन की हर टेम दूसरां खातर धारा सी चालती रैवै, बी नै छोटै मोटै काम खातर स्यारणे ठीक कोनी, एक ही आदमी पर लद पड़नो ठोक नईं । दीये को जागणो हाबूलां खातर थोड़ो ई होवै है ? पण भाईजी स्कूल मे मशी जी के आसवासन स्यूं लगाय कर टायरा की हड़ताल ताणी की सारी बात बतादी और सागे आ भी कह दी 'क मास्टरजी प्रयत्न कर रैया है। मैं सकोच बस भेलो भेलो हो रैयो हो, दो एक पांवड़ा पैंडियां कानी भी दिया । पण मोमवत्ती आपरी आंच स्यूं आप ही पिघलै, बी को कोई के करै ।

भाईजी के हाथ मे कंपनियां का कैट लॉग हा । सब स्यूं घणी कीमत वाली मसीन के आपकै हाथ स्यूं निसाण लगा दियो, बोल्या,

चनणमलजी कन्नै जाम्रो, बोल देयो, मोहनलाल कैयो है, इसी एक मशीन मास्टरजी नैं देणी है, नटैं तो मेरो नांव ने देयो। बादल के बरसणै के सुभाव नैं सराऊं 'क विद्या-मंदिर के परताप नै सराऊं ? पांच की धारणा बणा कर चाल्यो हो, दस लेकर आयो।

मरुधर के ईं लाडेसर की या बात कह कर जीभ तो अनेक बार आनन्द लियो हो, आज कलम भी कृतार्थ होगी।

कुञ्जविहारी स्मृति ग्रन्थ माला

के

आगामी पुष्प

(१) श्री कुञ्ज विहारी स्मृति सुमन

(२) बातां ही चालै–भाग दूजो ।

इस में पहले भाग से अधिक बातें होंगी ।

(३) चूरू जिले की वनौषधियां ।

इस में चूरू जिले की समस्त वनौषधियों

के सम्बन्ध में अत्यंत उपयोगी और

सचित्र जानकारियां होंगी ।

नगर-श्री चूरू

द्वारा

चूरू जिले का राजनैतिक, सामाजिक, साहित्यक, व सांस्कृति

वृहत् इतिहास

दो खण्डों में प्रस्तुत किया जा रहा है ।

चूरू जिले के अनेक महत्वपूर्ण और अप्रकाशित तथ्य

पहली बार सामने आ रहे हैं

इतिहास में अनेक दुर्लभ चित्र भी होंगे ।

पहला खण्ड मुद्रण के लिए तैयार है,

प्रति शीघ्र सुरक्षित करवाइये ।

[illegible]श्री चूरू

[illegible]

[illegible], [illegible], [illegible],

[illegible]हत् इतिहास

[illegible] किया जा रहा है।

[illegible] और अप्रकाशित

[illegible] सामने आ रहे हैं

[illegible] दुर्लभ चित्र भी होंगे।

[illegible] के लिए तैयार है.

[illegible] सुरक्षित करवाइये।

൨൯൬൪.
൨-൧൦-൬൦